पंजीयन संख्या-69904/98
डाक पंजीयन संख्या-एसएसपी/एल०डब्ल्यू०/एन०पी०/318/2017-19

ओ३म्

श्रृण्वन्तुविश्वे अमृतस्य पुत्राः

आर्य्य लोक वार्ता

लखनऊ से प्रकाशित वैदिक विचारधारा का हिन्दी मासिक

वर्ष-२१, अंकः-२-३, अगस्त-सितम्बर(संयुक्त), सन्-२०१८, सं०-२०७५ वि०, दयानंदाब्द १९४, सृष्टि सं० १,९६,०८,५३,११९; मूल्य : एक प्रति ५.००रु., वार्षिक सहयोग १००.०० रुपये

श्रीश्यामनारायण पाण्डेय–जयन्ती पर विशेष

कविवर श्रीश्यामनारायण पाण्डेय में जनमानस को हिलोरकर ज्वार-भाटा उठाने की क्षमता थी!

'हल्दीघाटी' और 'जौहर' काव्य अविस्मरणीय बने रहेंगे

-डॉ.शिव प्रसाद सिंह-

व्यक्तियों की तरह पारिभाषिक शब्द भी दुःखात्मक विडंबना के शिकार होते हैं। राष्ट्र और पुनरुत्थान दोनों ही शब्द इन दिनों व्यापक आक्रमण के केन्द्रबिन्दु बने हुए हैं। कुछ वर्ष पूर्व राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की शताब्दी मनायी गयी। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में इसी चर्चा प्रसंग में कुछेक समीक्षकों द्वारा 'दद्दा' की कृतियों पर, विशेषतः 'भारत भारती' पर पुनरुत्थानवादी हिन्दुत्व का लेबल लगाया गया। राष्ट्रीय आन्दोलन की दोनों ही धाराओं, अहिंसक गांधीवाद और हिंसक क्रान्तिकारिता का प्रेरणास्रोत 'भारत भारती' को माना जाता रहा है। राष्ट्रीय आन्दोलन में जिस काव्य-ग्रंथ से अनेकानेक ज्ञात विज्ञात सेनानी प्रेरणा पाते रहे हैं उस पर ही पुनरुत्थानवादी हिन्दुत्व का लेबल लगाने वाले समीक्षक अपनी तथाकथित अत्यन्त क्रान्तिकारी समीक्षा का मानदण्ड मार्क्सवादी मान्यताओं को मानते रहे। साहित्य में गैर साहित्यिक मानदण्ड जब व्यवहृत होते हैं, तो एक धुंध छा जाती है। आज जब पूरे साम्यवादी आन्दोलनों के खेमे उखड़ गये हैं और विश्वव्यापी परिवर्तन के थपेड़ों में उसके परखचे उधड़ गये हैं तो हमें कुछ रुककर इन दोनों शब्दों यानी 'राष्ट्र' और 'भारत' पर विचार कर लेना चाहिए। वर्षों से भारतीय राजनय के क्षेत्र में घृणित माने जानेवाले इन शब्दों में अचानक क्षुद्र हिन्दुत्व का एक ऐसा रंग उभरा है कि काव्य-जगत् में इन दोनों शब्दों के मानी ही बदल गये हैं। भारत कहने से भारतीय जनता पार्टी की और राष्ट्र कहने से राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की याद आने लगे तो इसे दैव दुर्विपाक नहीं तो और क्या कहेंगे? पर ऐसी स्थिति है और वह दुःखद भी बनी रहेगी।

वस्तुनिष्ठ इतिहास एक कोरी कल्पना है। सम्पूर्ण अंग्रेजी साहित्य एंग्लो सेक्शन ब्लड की महत्ता की प्रकारान्तर से प्रशस्ति है। शेक्सपियर उनका वैसा ही चारण कवि है जैसा चन्दबरदाई था। यह अलग बात है कि वर्तमान शिक्षा और तकनीकी ज्ञान के कारण भारत का चन्दबरदाई एक छोटा और शेक्सपियर बहुत बड़ा कवि है। परन्तु वह कालिदास को छू नहीं पायेगा बावजूद इस सत्य के कि कालिदास रघुवंश सूर्यवंश की उच्चता का वैसा ही प्रचारक है जैसा शेक्सपियर के नाटक अंग्रेज जाति की उच्चता गाते हैं। मार्क्सवादी कम्युनिस्ट समीक्षक 'भारत-भारती' जैसी कृति में हिन्दुत्व का पुनरुत्थानवादी रूप देखने लगे हैं। जिस 'भारत-भारती' ने राष्ट्रीय आन्दोलन के दिनों में गांधी चिन्तन के साथ जुड़कर उसे शक्ति और व्यापकता दी वही रिवाइवेलिस्ट या पुनरुत्थानवादी लगने लगी। 'भारत-भारती' दूसरी ओर क्रान्तिकारियों के दिल में भी बसा करती थी। इसी कारण भारत-भारती को विदेशी साम्राज्यवादियों ने प्रतिबन्धित किया। पर वह एक दो नहीं, हजारों बलिपंथी राष्ट्रीय संग्राम के सेनानियों का प्रेरणास्रोत बनी रही, जिसे इतिहास का विद्यार्थी कहीं भी देख सकता है। पत्रकार गणेश शंकर विद्यार्थी से लेकर बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' और माखनलाल चतुर्वेदी जैसे कवि उस पुस्तक की याद प्रेरणादायक मशाल के रूप में करते हैं, पर स्वतंत्रता-संग्राम में जिन साम्यवादियों की भूमिका संदिग्ध रही, उन्हीं की प्रेरणा से 'भारत-भारती' को पहले विदेशी सत्ता से तो बाद में हाथीदाँत की मीनारों में बैठकर जीनेवाले साम्यवादियों द्वारा अपमानित होना पड़ा।

चीनी आक्रमण के दिनों में मुझे याद है कि भारत के प्रचार माध्यम खासतौर पर पत्र-पत्रिकायें और आकाशवाणी पाकिस्तानी आक्रमणों की पृष्ठभूमि में राणा प्रताप और छत्रपति शिवाजी के जीवन को, उनके देश-प्रेम को, उनके बलिदान को बहुत ही ओजस्वी ढंग से प्रस्तुत करती रहीं, वैसे ही उन महापुरुषों के बलिदान और शौर्य भरे गीतों से चीनी हमले के दिनों में भी उसी उत्साह और सूर्यनाद की तरह हिमालय की उत्तुंग चोटियों को प्रतिध्वनित करती रहीं। ऐसा क्यों होता है? भारत संकट में राष्ट्रीय चेतना किसी सिकन्दर, रुस्तम, सोहराब की वीरता के गीत गाने से तो कुत्सा में डूब जायेगी। वहाँ तो इतिहास-पुरुष बनकर या तो प्रताप आते हैं या तो शिवाजी या गुरु गोविन्द सिंह। फिर एक नयी मिश्रित परस्परावलंबित भारतीय संस्कृति का जिसे मैं गंगोजमुन तहजीब या संस्कृति कहता हूँ ऐसा रूप सामने आता है, जिसमें एक साथ बहादुरशाह जफर हैं, तो झाँसी की रानी भी हैं। उसमें हजरतमहल हैं तो साथ में बैसवाड़े के बेनीमाधव सिंह भी हैं, नाना साहब हैं तो जगदीशपुर के कुँवर सिंह भी हैं, मंगल पाण्डेय हैं तो उसी के साथ तात्या टोपे भी हैं। इन्हीं वीरों की कहानियाँ एक नयी आभा लेकर अवतरित हुईं, इसमें शक नहीं। पर भारतीय जनजीवन को आभ्यन्तर तक छूने की शक्ति तो लोकमानस में बसी उन शौर्यगाथाओं में ही है, जो आज भी उसके हृदय की धड़कन में बसी हैं। आज भी आल्हा की कथा या चन्देल-चौहान युद्ध का स्वर वीरता की एक नयी चमक जगाता है, खूब लोकप्रिय है। इसे आप क्या राष्ट्रीय कहेंगे या पुनरुत्थानवादी? जिन्हें पद्मावत सेकुलर लगता है और उसी पद्मिनी पर लिखा 'जौहर' हिन्दुत्व का दुराग्रह, उन्हें बार-बार आत्मपरीक्षण करना चाहिए कि सारी प्रशंसाओं के होते हुए भी साहित्य की सूफी धारा आध्यात्मिक एकता या प्रेमकथा की मादकता के बावजूद भारत के लोकमानस को क्यों नहीं छू सकी, जबकि आल्हा जो राष्ट्रीय स्तर पर कोई मेलमिलाप या भाइचारे का पाठ नहीं पढ़ाता, सर्वत्र महाभारत के बाद वीररस के स्रोत के रूप में गाँव-गाँव में गाया जाता है। इसीलिए हमें वीररस को उद्देश्य मानकर लिखे हुए काव्यों का अध्ययन हिन्दू-मुस्लिम मतभेदों को आवरण बनाकर नहीं करना चाहिए।

इसी एकांगी दृष्टिकोण के कारण बहुतेरे अच्छ लोग भी साम्प्रदायिक आरोपों से लांछित होने के कारण जातिवादी छोर पर जाने के लिए विवश होते हैं। तब लक्ष्मीनारायणलाल जैसे नाटककार हिन्दुत्व को एक पूज्य विषय मान लेते हैं। कोई किसी को पूजे, उसके वर्चस्व का गान करें वह उसका व्यक्तिगत अधिकार है। चर्चा एकांगी तब होती है जब हम भूल जाते हैं कि राष्ट्रनायकों को भुलाना समीक्षकों के लिए वरेण्य भले ही हो, जनता उस वरेण्यता पर निरर्थकता का ठप्पा लगाकर एक तरफ फेंक देती है। इसी जनमानस को हिलोरकर, उसमें ज्वार भाटा उठाने की क्षमता कविवर श्याम नारायण पाण्डेय में थी और इसी कारण उनके दो काव्य 'हल्दीघाटी' और 'जौहर' अविस्मरणीय बने रहेंगे। काव्य के सौन्दर्य पक्ष के व्याकरण को समझनेवाले चाहे श्याम नारायण जी को छायावाद की चतुष्टयी के सामने नगण्य मानें, जो गलत भी नहीं है, पर जनता के वैतालिक के रूप में श्यामनारायण जी का स्थान बहुत ही महत्त्वपूर्ण है और कुछ अंशों तक तब तक रहेगा जब तक हिन्दी क्षेत्र की जनता को इनसे ओजस्वी कोई अन्य काव्य नहीं मिल जाते।

डॉ.शिव प्रसाद सिंह

(शेष पृष्ठ ३ पर)

विनय पीयूष

यह वृषभ कौन है ?

चत्वारि शृङ्गा त्रयोऽअस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासोऽअस्य।
त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महो देवो मर्त्यॉं२।।ऽआविवेश।।

(यजु. : 17/91)

चार शृंग हैं, तीन पाद हैं,
दो शिर, सात हाथ हैं इसके,
तीन तरह से बंधा हुआ,
पर बढ़ा आ रहा
जन-जीवन की ओर,
रंभाता वृषभ कौन है?

चार शृंग, ये चार वेद हैं,
तीन पाद, ये तीन काल हैं,
दो शिर, ये संध्या, प्रातः हैं,
सात हाथ, ये सात छंद हैं;
मन्त्र, ब्राह्मण और कल्प से बंधा हुआ,
यह वृषभ नहीं है;
जन-जीवन में सुख वर्षाता,
मन्त्रों को अनुगुंजित करता,
महादेव है, दिव्य यज्ञ है।

महादेव का स्वागत कर लो!
अनुष्ठान कर दिव्य यज्ञ का
सब खुशियों से जीवन भर लो!

काव्यानुवाद : अमृत खरे

सम्पादकीय

भारतोदय की भूमिका - सरयूबाग अयोध्या

श्री हृदयनारायण दीक्षित (अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश विधान सभा) का लेख 'गलत परम्परा की पैरवी' दैनिक जागरण (३०.०७.१८) ने प्रकाशित किया है। लेखक ने देश के सभी मंदिरों में महिलाओं के बिना किसी भी प्रकार के भेदभाव के निर्बाध प्रवेश के संविधान प्रदत्त अधिकार का तर्कसंगत अनुमोदन किया है। दैनिक जागरण के जिस अंक में दीक्षित जी का लेख प्रकाशित है, उसी अंक के मुखपृष्ठ पर हमीरपुर (राठ) का एक समाचार भी है-'महिला विधायक के प्रवेश पर गंगाजल से मंदिर की धुलाई'।

मंदिर में बेहिचक प्रवेश करने वाली महिला विधायक मनीषा अनुरागी स्तुत्य एवं अभिनन्दनीय हैं। यहाँ यह जानना जरूरी है कि जिस देश में सदियों से 'स्त्रीशूद्रोनाधीयताम्' की मान्यता चली आ रही थी; वह कौन सी शक्ति थी; जिसने एक ऐसा निर्णायक मोड़ दे दिया; जिसके कारण आज श्री दीक्षित नारियों के मंदिर प्रवेश का समर्थन करते हैं, संविधान नारियों को समानता का अधिकार देता है तथा मनीषा अनुरागी बेहिचक मंदिर में प्रवेश करती हैं। यह जानने के लिए बीसवीं सदी के पूर्वार्ध की एक घटना का उल्लेख उपयोगी होगा।

जिन दिनों काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना हो चुकी थी, उसके सर्वांगीण विकास और प्रगति का रथ आगे बढ़ रहा था, महामना मदनमोहन मालवीय हिन्दुओं की ज्ञान गरिमा के इस केन्द्र को सम्पूर्ण रूप देने हेतु जी तोड़ परिश्रम कर रहे थे और सर्वपल्ली डॉ.राधाकृष्णन जैसे अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिलब्ध विद्वान् विश्वविद्यालय के कुलपति थे। उन्हीं दिनों आर्य वैदिक सिद्धान्तों के मर्मज्ञ मुंशी श्री महेश प्रसाद (आलिम फाजिल) भी विश्व विद्यालय में अध्यापन कार्य हेतु नियुक्त थे। मालवीय जी की सत्प्रेरणा से विश्व विद्यालय को सब प्रकार से समृद्ध बनाने के सदुद्देश्य से विश्वविद्यालय में वेद विभाग की स्थापना की गई। यह जानकर कि हिन्दू वि.वि. में वेद की शिक्षा दी जायगी- मुंशी महेश प्रसाद जी की विदुषी सुपुत्री सरस्वती देवी ने वेद विभाग में प्रवेश हेतु आवेदन पत्र भर दिया किन्तु उस समय जो वेद विभाग के अध्यक्ष और अन्य लोग कर्ता धर्ता थे, उन्होंने तो यह शास्त्र वाक्य रट रखा था-'स्त्री शूद्रो ना धीयताम्'। अर्थात् स्त्री और शूद्र को वेदपाठ का अधिकार नहीं है। फलतः उन्होंने सरस्वती जी को अर्थात् एक महिला को वेद की कक्षा में प्रवेश देने से इनकार कर दिया। मुंशी महेश प्रसाद जी कब हार मानने वाले थे। उन्होंने मालवीय जी के सामने अपना पक्ष रखा। मालवीय जी ने मुंशी महेश प्रसाद से कहा-'क्या आप कोई प्रमाण दे सकते हैं? जो हम विभागाध्यक्ष को दिखा सकें।' मुंशी जी ने महामना मालवीय जी को 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' ग्रंथ दिया और उसमें से 'अधिकारानधिकारविषयः' अध्याय में यजुर्वेद अ.२६/मं.२ वेद मंत्र-'यथेमां वाचं कल्याणी मावदानि जनेभ्यः।' दिखाया। वेद विभागाध्यक्ष को विवश होकर सरस्वती जी वेद कक्षा में प्रवेश की अनुमति देनी पड़ी। यजुर्वेद का वह मंत्र जो नारियों को वेदपाठ का अधिकार प्रदान करता है, इस प्रकार है-

यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः। ब्रह्मराजन्याभ्याᳫशूद्राय चार्य्याय च स्वाय चारणाय। प्रियो देवानां दक्षिणायै दातुरिह भूयासमयं मे कामः समृध्यतामुप मादो नमतु।।

परमेश्वर सभी मनुष्यों को वेद पढ़ने का अधिकार देते हुए कहते हैं- हे मनुष्य लोगों! जिस प्रकार मैं तुमको चारों वेदों का उपदेश करता हूँ, उसी प्रकार तुम भी उनको पढ़के सब मनुष्यों को पढ़ाया और सुनाया करो क्योंकि यह चारों वेद रूप वाणी सबका कल्याण करने वाली है; जैसे मैं सब मनुष्यों के लिए वेदों का उपदेश करता हूँ वैसे ही तुम भी सदा किया करो।'

'जन' शब्द से मनुष्यमात्र का अर्थ ग्रहण करना चाहिए क्योंकि इसी मंत्र में 'राजन्याभ्याम् शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय' कहकर स्पष्ट कर दिया गया है वेदाधिकार जैसा ब्राह्मण वर्ण के लिए है, वैसा ही, क्षत्रिय, अर्य्यवैश्य, शूद्र, पुत्र, भृत्य और अति शूद्र के लिए भी बराबर है।(ऋग्वेदादिभाष्यभू.२४२)

देवी सरस्वती प्रो.महेश प्रसाद (मौलवी आलिम फाजिल की पुत्री)के प्रयत्न और साहस के परिणाम स्वरूप आज नारियाँ वेदाध्ययन ही नहीं कर रही हैं, विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों का संचालन भी कर रही हैं।

वह ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका ही है; जिसने वेदमंत्रों को उनका वास्तविक अर्थ प्रदान किया; दासता के बेड़ियों को शिथिल करने की प्रक्रिया जिसके कारण प्रारंभ हुई; महादेव गोविन्द रानाडे, महात्मा ज्योति फुले जैसे समाज सुधारकों की क्षमता को विस्तार मिला; महर्षि अरविन्द ने जिसके एक एक अक्षर की सराहना की; जो रामप्रसाद बिस्मिल, लाला लाजपत राय, बल्लभभाई पटेल की प्रेरणाशक्ति बनी और भारतीय संविधान निर्माताओं को नारी-स्वातंत्र्य का उद्घोष करने का अवसर दिया। 'ऋग्वेदादिभाषभूमिका' पुस्तक मात्र नहीं है, भारत के भाग्योदय की भूमिका है- और इस भूमिका की रचना- भाद्रमास, शुक्लपक्ष, प्रतिपदा, रविवार को जिस पुण्य भूमि पर बैठकर की गई उसी स्थान का नाम है-'सरयूबाग, अयोध्या'। जहाँ आज भव्य स्मारक निर्माण की योजना बनाई गई है।

कोई कितने महापुरुषों के नाम क्यों न गिना ले, सड़कों और गलियों का नामकरण उनके नामों पर करले किन्तु सत्य यह है कि भारत के भाग्य ने जिस महापुरुष के कारण करवट बदली और सामाजिक क्रान्ति का बीज बोया गया- उसका नाम है, दयानन्द सरस्वती तथा उनकी रचना है-'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका'- तभी कविवर नाथूराम शर्मा शंकर ने लिखा था-

बीज विद्या का उसी के पुण्य पौरुष बो गया।
देख लो, लोगों, दुबारा भारतोदय हो गया।

सत्यार्थ प्रकाश वार्ता-१८७

युग प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती के अमरग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' के धारावाहिक स्वाध्याय के क्रम में नवम समुल्लास का अंश

वाह रे झूठे वेदान्तियो! तुमन सत्य स्वरूप, सत्यकाम, सत्यसंकल्प परमात्मा को मिथ्याचारी कर दिया। क्या यह तुम्हारी दुर्गति का कारण नहीं है? किस उपनिषद्, सूत्र या वेद में लिखा है कि परमेश्वर मिथ्यासंकल्प और मिथ्यावादी है? क्योंकि जैसे किसी चोर ने कोतवाल को दण्ड दिया अर्थात् 'उलटि चोर कोतवाल को दण्डे' इस कहानी के सदृश तुम्हारी बात हुई। यह बात तो उचित है कि कोतवाल चोर को दण्डे परन्तु यह बात विपरीत है कि चोर कोतवाल को दण्ड देवे। वैसे ही तुम मिथ्या संकल्प और मिथ्यावादी होकर वही अपना दोष ब्रह्म में व्यर्थ लगाते हों

जो ब्रह्म मिथ्याज्ञानी, मिथ्यावादी, मिथ्याकारी होवे तो सब अनन्त ब्रह्म वैसा ही हो जाय क्योंकि वह एकरस है; सत्यस्वरूप, सत्यमानी, सत्यवादी और सत्यकारी है। ये सब दोष तुम्हारे हैं; ब्रह्म के नहीं।

जिसको तुम विद्या कहते हो वह अविद्या है और तुम्हारा अध्यारोप भी मिथ्या है क्योंकि आप ब्रह्म न होकर अपने को ब्रह्म और ब्रह्म को जीवन मानना यह मिथ्या ज्ञान नहीं तो क्या है? जो सर्वव्यापक है वह परिच्छिन्न अज्ञान और बन्ध में कभी नहीं गिरता क्योंकि अज्ञान परिच्छिन्न एकदेशी अल्प अल्पज्ञ जीव में होता है, सर्वज्ञ सर्वव्यापी ब्रह्म में नहीं।

मुक्ति और बंध

अब मुक्ति बन्ध का वर्णन करते हैं

(प्रश्न) मुक्ति किसको कहते हैं?

(उत्तर) 'मुंचन्ति पृथग्भवन्ति जना यस्यां सा मुक्तिः' जिस में छूट जाना हो उसका नाम मुक्ति है।

(प्रश्न) किससे छूट जाना?

(उत्तर) जिससे छूटने की इच्छा सब जीव रखते हैं।

(प्रश्न) किससे छूटने की इच्छा रखते हैं?

(उत्तर) जिससे छूटना चाइते हैं।

(प्रश्न) किससे छूटना चाहते हैं?

(उत्तर) दुःख से।

(प्रश्न) छूटकर किसको प्राप्त होते और कहां रहते हैं?

(उत्तर) सुख को प्राप्त होते और ब्रह्म में रहते हैं।

(प्रश्न) मुक्ति और बन्ध किन किन बातों से होता है?

(उत्तर) परमेश्वर की आज्ञा पालने, अधर्म्म, अविद्या, कुसंग, कुसंस्कार, बुरे व्यसनों से अलग रहने और सत्यभाषण, परोपकार, विद्या, पक्षपातरहित न्याय, धर्म की वृद्धि करने; पूर्वोक्त प्रकार से परमेश्वर की स्तुति प्रार्थना और उपासना अर्थात् योगाभ्यास करने; विद्या पढ़ने, पढ़ाने और धर्म से पुरुषार्थ कर ज्ञान की उन्नति करने; सबसे उत्तम साधनों को करने और जो कुछ करे वह सब पक्षपातरहित न्यायधर्मानुसार ही करे। इत्यादि साधनों से मुक्ति और इनसे विपरीत ईश्वराज्ञाभंग करने आदि काम से बन्ध होता है। *(-क्रमशः)*

वेदांजलि

सेनापति के गुण

□ पं.शिव कुमार शास्त्री
भू.पू.संसद सदस्य

अभि गोत्राणि सहसा गाहमानोऽदयो वीरः शतमन्युरिन्द्रः।
दुश्च्यवनः पृतनाषाडयुध्योऽस्माकँसेना अवतु प्र युत्सु।।

-यजुः 17/39

शब्दार्थ-

(सहसा) शीघ्र तथा शत्रु-पराजयकारी बल से **(गोत्राणि)** शत्रुओं के कुलों पर **(अभिगाहमानः)** आक्रमण करता हुआ **(अदयः)** दयारहित **(वीरः)** वीर **(शतमन्युः)** सैकड़ों प्रकार से शत्रु पर कोप प्रकट करने में समर्थ **(दुश्च्यवनः)** शत्रु से विचलित न होनेवाला **(पृतनाषाड्)** शत्रु-सेनाओं से युद्ध करने में समर्थ **(अयुध्यः)** युद्ध में शत्रुओं के अजेय **(इन्द्रः)** सेनापति **(युत्सु)** संग्रामों में और योद्धाओं के बीच में **(अस्माकम्)** हमारी **(सेनाः)** सेनाओं की **(प्रअवतु)** उत्तम प्रकार से रक्षा करे।

व्याख्या-

यजुर्वेद के इस मंत्र में सेनापति के नौ महत्त्वपूर्ण गुण गिनाए गए हैं।

सेनापति का पहला गुण **'इन्द्र'**-'परम वीरता के ऐश्वर्य से सम्पन्न' होना है। चाहे शत्रु-सेना कितनी भी क्यों न हो, उसे देखकर उसमें उत्साह की कमी नहीं आनी चाहिए। सेना की यह एक स्वाभाविक प्रक्रिया है कि- एक ओजस्वी संचालक अपनी अदम्य उत्साहशक्ति और वीरता से सारी सेना में वीरता का संचार कर देता है, और जहाँ सेनापति निरुत्साही और दब्बू हो, वहाँ बहुत बड़ी सेना के भी पैर उखड़ जाते हैं और उसमें भगदड़ मच जाती है। बांग्ला देश में गत भारत और पाक युद्ध में पाकिस्तान का सेनापति ही हिम्मत हार गया था और पाकिस्तान की लगभग एक लाख सेना ने घुटने टेककर हथियार डाल लिये थे।

दूसरा गुण-**'गोत्राणि सहसा अभिगाहमानः'**-जो शत्रु पर पूरी शक्ति से और शीघ्र आक्रमण करनेवाला हो। युद्ध में इस बात का भी महत्त्व है। लोक में 'पहले मारे सो मीर' कहावत एक ठोस अनुभव रखती है। इससे शत्रु अपनी रक्षा की चिन्ता में ही उलझ जाता है और कुछ सँभलने के बाद ही प्रत्याक्रमण की स्थिति आती है। आक्रमण भी पूरी शक्ति से होना चाहिए। शत्रु को निर्बल समझकर कुमुक ही थोड़ी भेजी, आक्रमण ही ढीला हुआ तो ये त्रुटियाँ शत्रु का हौसला बढ़ानेवाली होती हैं।

तीसरा गुण बताया **'अदयः'**-शत्रु पर शीघ्र दया-द्रवित नहीं होना चाहिए। प्राचीनकाल में, युद्ध के नियमों में कुछ नियम गिनाए गए हैं जिनमें शत्रु को छोड़ने की बात भी कही गयी है, किन्तु इसके लिए भी देखना चाहिए कि शत्रु कैसा है? इस विषय में जयद्रथ के ऊपर दया करके उसे छोड़ने के लिए भीम को जब युधिष्ठिर कह रहे थे तो द्रौपदी ने कमाल की बात कही-

भार्याभिहर्त्ता वैरी यो यश्च राज्यहरो रिपुः।
प्राणान् याचमानोऽपि न मोक्तव्यः कदाचन।।

'जिस शत्रु की दृष्टि स्त्रियों पर हो और जो राज्य छीनना चाहे, ये दो प्रकार के शत्रु कभी क्षमा करने योग्य नहीं होते।'

कर्ण निःशस्त्र होने की दुहाई देता रहा, किन्तु कृष्ण उसे मारने के लिए ही अर्जुन को कहते रहे। शत्रु पर दया करके जो मूर्खता पृथिवीराज चौहान मुहम्मद गौरी को छोड़ने में करते रहे, उसका घातक परिणाम अबतक भारत को भोगना पड़ रहो है।

इससे अगला गुण सेनापति का कहा **'वीरः'**। सामान्यतया शूर और वीर पर्यायवाची समझे जाते हैं, किन्तु धातुगत अर्थ को देखते हुए दोनों में अन्तर यह है कि शूर शब्द हिंसार्थक 'शृ' धातु से बना है, अतः यह शब्द मुख्यरूप से उस सैनिक बल का वाचक है, जो आदेश पर गोली चला देता है, सोचना-विचारना उसका काम नहीं। किन्तु वीर शब्द गत्यर्थक 'वीर' धातु से बना है, अतः सेना का सम्पूर्ण नीति-निर्धारणपूर्वक युद्ध करना, ये सभी बातें वीर शब्द में समा जाती हैं। ये सभी योग्यताएँ सेनापति के लिए अनिवार्य हैं।

इससे आगे का गुण बताया **'शतमन्युः'** -अनेक प्रकार से जो शत्रु पर अपना क्रोध प्रकट करे। केवल तलवार और गोली चलाना नहीं, अपितु रसद का भण्डार समाप्त करना, सुरंग बिछाना, पानी की सप्लाई काटना, शत्रुवाहनों की गति एंव ऊर्जा-स्रोतों को नष्ट करना आदि सब बातें शतमन्यु में आ जाती हैं।

इससे आगे कहा **'पृतनाषाड्'**-शत्रु सेना को विजय करने में समर्थ। वेद और संस्कृत के पृतना शब्द से ही उर्दू और फारसी का फितना शब्द बना है, अतः इसका मुख्य भाव है शत्रु की नीति की चाल को समझकर अपने कौशल से उसका प्रतिकार करने में समर्थ। यह गुण सेनापति में अवश्य होना चाहिए। कृष्ण और चाणक्य की सफलताएँ इसी गुण के परिणामस्वरूप थीं। कृष्ण पाण्डवों के दूत बन सन्धि का सन्देश लेकर गए तो दुर्योधन की चाण्डाल-चौकड़ी ने विषाक्त भोजन खिलाकर उन्हें समाप्त करने की योजना बनाई। दरबार समाप्त होने पर दुर्योधन ने जब भोजन का आग्रह किया तो कृष्ण उनकी बेईमानी को पहले ही भाँप चुके थे। स्पष्ट उत्तर दिया-

सम्प्रीति भोज्यान्यन्नानि आपद्भोज्यानि वा पुनः।
न सम्प्रीयसे राजन् न चैवापद्गता वयम्।।

'या तो भोजन प्रेम में किया जाता है, या विपत्ति में। भूख ने तंग कर रक्खा है, जिसने दो रोटी दे दी, खा लीं। तो पहली स्थिति तो तुमने समाप्त कर दी। मैं प्रेमपूर्वक जिस प्रस्ताव को लाया था, तुमने नहीं माना। दूसरी बात रही विपन्न अवस्था की, उसमें मैं नहीं हूँ। यहाँ घर घर मेरे लिए रोटी है।' इस सूझबूझ का नाम है-'पृतनाषाट्'।

इससे आगे अन्तिम गुण बताया **'अयुध्यः'**-जिसके साथ लोहा न लिया जा सके, जैसे महाभारत के भीष्म, द्रोण। कृष्ण ने इन महारथियों को 'अयुध्य' समझकर ही शिखण्डी को खड़ा करने का उपाय निकाला और द्रोणाचार्य को मारने के लिए 'अश्वत्थामा मारा गया' का शोर मचवाया।

इन गुणों से युक्त सेनापति हमारी सेनाओं की युद्धों में रक्षा करे। *('श्रुति सौरभ' से साभार)*

दयानन्द चरितम्

-आचार्य दीपंकर, मेरठ

छन्द-१९१

अयं धूर्त्तस्तेभ्यः परमकुटिलो मूलहरणः
स नो गाथामर्त्यान् विमलमितिहासं न सहते।
विकृत्यायं भूयः शुभमपि विरूपं प्रकुरुते
न पूर्वं क्राइस्टात् किमपि कमनीयं स मनुते।।

फिरंगी, मुसलमानों की तुलना में
अधिक धूर्त हैं !
ये परम कुटिल हैं जो हमें
जड़-मूल से उखाड़ते हैं !!
इन्हें हमारे ऐतिहासिक गाथापुरुष
सहन नहीं हैं और
हमारा विमल इतिहास भी
इन्हें नहीं भाता !!!
हमारे शुभ इतिहास को भी
यह विकृत करके प्रस्तुत करता है !
वह मानता है कि
क्राइस्ट से पहले संसार में
कुछ भी कमनीय तथा
अनुकरणीय नहीं था !!

('दयानन्द चरितम्' से साभार, क्रमशः)

सत्संग

जिज्ञासा और समाधान

जिज्ञासा :

संसार में जो कुछ भी चलायमान है या गतिशील है उसमें सर्वशक्तिमान ईश्वर ही विद्यमान सर्वव्यापक होना चाहिए। इस चलायमान वस्तु को त्यागते हुए ही भोगो अर्थात् सुखलाभ करो। लालच मत करो। यह धन किसका हुआ है। एक हम हैं और दूसरा हमारे अतिरिक्त संसार है। यह संसार सदा गतिशील रहता है। ऐसे चलायमान संसार को 'जगती' कहा गया है। इस प्रकार संसार के अवयव और अवयवी दोनों ही गतिशील हैं। स्थावर और जंगम, अचर और चर जिनको स्थावर कहते हैं जैसे पर्वत आदि जो जंगम क्या ये जगत जंगम की कोटि में आते हैं-इनमें निश्चलता है ही नहीं। इनको स्थावर या 'ठहरे हुए' केवल अन्य वस्तुओं की अपेक्षा से कहते हैं। वेद के अनुसार दोनों सर्वथा भिन्न हैं। एक जगत है तो दूसरा ईश है। जगत गति वाला है और ईश गति देने वाला। जगत परिवर्तनशील है जबकि ईश्वर नहीं। कृपया मार्गदर्शन करें।

-पात प्रवीण, योगाश्रम, अलीगंज, लखनऊ

समाधान :

जिज्ञासा के माध्यम से आपने जो विचार प्रस्तुत किये हैं; वे ईशोपनिषद अथवा यजुर्वेद अध्याय ४० के प्रथम मंत्र पर आधारित हैं। इस मंत्र में ईश्वर, जीव, प्रकृति-तीन अनादि सत्ताओं के पारस्परिक सम्बन्धों एवं व्यवहार की सारगर्भित विवेचना की गई है।

संसार और जगत शब्द समानार्थक होते हुए भी इनमें तात्विक भेद है। संसार-मेरा-तेरा, माया मोह आसक्ति का नाम है जबकि जगत प्रकृति का बोधक है। आसक्ति (संसार) रहित होकर ही जीवात्मा ईश्वर की ओर उन्मुख हो सकता है- 'इदन्नमम्' द्वारा इसीका अभ्यास कराया जाता है। 'मागृधः' में यही बात समझाई गई है।

'हम' में दो तत्व हैं- जीवात्मा और शरीर। शरीर जगत (प्रकृति) का अंग है जबकि जीवात्मा का पृथक अस्तित्व है। कर्म करने हेतु जीवात्मा का (पंचभूतों से निर्मित) शरीर धारण करना आवश्यक है। शरीर के बंधन से मुक्त होना ही जीवात्मा का शाश्वत लक्ष्य है-'बंधनात् मुक्षीय' में यही बात कही गई है।

जगत में सभी गतिशील है। धरती सतत चक्रमित है तो कोई स्थिर कैसे रह सकता है। ईश्वर की भौतिक उपस्थिति कहीं नहीं है किन्तु सूक्ष्म रूप में वह जीवात्मा और प्रकृति (जगत) में मौजूद है तथा सबका नियमन करता है।

जहाँ तक आपके उपर्युक्त विचारों का ताल्लुक है, वे अपने आप में समाधान हैं। इनमें पर्याप्त स्पष्टता है; कोई प्रश्न या जिज्ञासा आपके द्वारा प्रस्तुत नहीं की गई है। आपने मुझसे मात्र मार्गदर्शन की अपेक्षा की है। एतदर्थ, निम्नांकित बिन्दु ध्यातव्य हैं-

(अ) इस मंत्र के यथार्थ तक पहुँचने के लिए अगला मंत्र- 'कुर्वन्नेवेहि कर्माणि..' उपयोगी है। उक्त मंत्र को मिलाकर देखना आप जैसे स्वाध्याय एवं मननशील व्यक्ति के लिए समीचीन होगा।

(ब) इस विषय की तह तक पहुँचने के लिए महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज कृत 'ईशोपनिषद' पुस्तक अवश्य देख लेना चाहिए।

(स) 'एकदशोपनिषद्'-डॉ.सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार- पुस्तक की भूमिका में इस मंत्र को लेकर डॉ.सर्वपल्ली राधाकृष्णन् ने उत्तम विचार प्रकट किए हैं, अवश्य देखें।

-सम्पादक

(पृष्ठ 1 का शेष....)

कविवर श्रीश्यामनारायण...

श्यामनारायण पाण्डेय को भी आर्य संस्कृति पर अभिमान है। वे 'जौहर' की भूमिका में लिखते हैं- ''जौहर' अपनी आर्य-संस्कृति के संरक्षण में सहायक होगा और संस्कृति के पुजारियों की कमी नहीं, इसलिए इसका प्रचार स्वयंसिद्ध है।' जमाना था जब हिटलर को आर्यसंस्कृति का घमण्डी तानाशाह कहकर गालियाँ दी जाती रहीं। निःसन्देह वह उसका पागलपन था, उसकी प्रमत्तता का वह स्वांग निन्दनीय कहा जायेगा। उसके द्वारा प्रयुक्त ध्वज पर स्वस्तिक का चिन्ह तानाशाही का प्रतीक बना था पर क्या इसी कारण भारतवर्ष में कलश-स्थापना के समय घट पर स्वस्तिक उकेरना, अल्पनाओं में स्वस्तिक बनाना निकृष्ट मान लिया जाय? श्री अरविन्द से लेकर हजारों चिन्तकों ने अपने अध्यात्म-चिन्ह के रूप में अधोमुखी और ऊर्ध्वमुखी त्रिभुज के षट्कोण को स्थान दिया है। आज इजराइल के ध्वज पर यही चिन्ह चलता है। इसीलिए इसे निकृष्ट मान लिया जाय? सत्य उलटा है। इसमें अवगुण ढूँढने की जगह मानवता के परस्परावलम्बन का रूप देखना चाहिए था। एक ही चिन्ह यदि कई धर्मों में सामान्य रूप से पूजित है, तो यह ईर्ष्या का, द्वेष का नहीं, भाईचारे का काम करते हैं। कवि समाज को छोटे छोटे आदर्शों से तोड़ता नहीं, जोड़ता है। संस्कृत के अधिकांश नाटककार पति को आर्यपुत्र लिखते हैं। आर्या के लिए अइय्या शब्द आज भी गाँवों तक में बोला जाता है। यह सब पाखण्ड नहीं है, किसी जीवित संस्कृति के अन्तस्तल में प्रवाहित रहने का स्पष्ट उदाहरण है।

'जौहर' की कहानी ऐतिहासिक है। इसका विवरण मुस्लिम इतिहासकारों में भी मिलता है। अलाउद्दीन की काली करतूतों का यह एक जीवन्त उदहारण है, सबूत है। पद्मिनी का ही नहीं, गुजरात के कर्णराय की रानी कमला का भी अपहरण करना उसका ध्येय रहा। निराशा सिर्फ पद्मिनी वाले काण्ड में हुई, सफलता कमला काण्ड में मिली, देवगिरि के राजा की पुत्री छिताई को छीनने में भी वह सफल ही हुआ। इधर एक ऐतिहासिक उपन्यास आया है देवगिरि विलावल जो कुहेलिका को तोड़ता है ओर सही इतिहास को प्रस्तुत करता है। इन कृत्यों को कोई एक धर्म अपनी अगर विजय माने तो निःसन्देह उस कृत्यकी जघन्यता पर मानवता थूकती है। 'जौहर' में यदि उसकी निकृष्टता का चित्रण है तो वह ऐतिहासिक आधार से पुष्ट है। कवि की कल्पना यदि सत्य की एक बूँद को समुद्र में बदल दे तो यह उसकी सफलता ही है, सम्प्रदायिक क्षुद्रता नहीं।

इस काव्य में नारी जाति के सम्मान को राजाओं, बादशाहों, सम्राटों के झुके हुए मुकुट प्रणाम करते हैं तो यह कवि की क्षमता का सबूत है। 'जौहर' उनका एक अच्छा काव्य है। इसमें वर्णित मानवमूल्य हमें आकृष्ट करते हैं, स्वदेश के लिए मर-मिटनेवाले गोरा-बादल की स्मृतियाँ मन को चौड़ा बनाती हैं, भावना और गहराई देती है, मस्तिष्क में ऊष्मा जगाती है और निश्चेष्ट पाठक को भी कुछ क्षणों के लिए सत्ता के चरणों में झुक जाने को विवश करती है।

('जौहर' काव्य की भूमिका 'एक पुरानी संवेदना का नवीन आख्यान' का संपादित अंश-साभार)

व्यक्ति-विशेष

मानस-चन्दन प्रभा

पाण्डेय रामेन्द्र

दिनांक ६ जून, २०१८ को प्रातः मोबाइल ने ओं भूर्भुवः स्वः की ध्वनि सुनाई। दूसरी ओर से आवाज आई-'आर्य जी, अप्रैल-मई के अंक एक साथ पढ़ गया, आपके दोनों सम्पादकीय पढ़कर चित्त प्रसन्न हो गया। कुछ सहयोग अपने खाते से आ.लो.वा. के खाते में ट्रांसफर कर रहा हूँ।' मैं अचम्भे में पड़ गया, यह किसी आवाज होगी। यह वाणी थी-डॉ.पाण्डेय रामेन्द्र की।

समय समय पर पाण्डेय रामेन्द्र की ऐसी वार्ताएँ नवजीवन, आशा-उल्लास का संचार कर जाती हैं। यह कोई पहला अवसर नहीं था। रामेन्द्र पाण्डेय बातों में नहीं कर्म में विश्वास रखते हैं। उनका आर्थिक सहयोग इसका सच्चा सबूत है। वे जानते हैं किसी वैचारिक पत्र का चलाना कितना दुरूह कार्य है।

नाट्य विधा के प्रसिद्ध आचार्य पं.चन्द्रमणि (बछरावाँ, रायबरेली) के पुत्र पाण्डेय रामेन्द्र फीरोज गांधी पी.जी.कॉलेज रायबरेली के हिन्दी विभाग के सेवानिवृत्त रीडर प्रोफेसर हैं। कई ग्रंथों के लेखक सम्पादक हैं। वे मेरे गुरुभाई हैं।

आज जिस 'मानस चंदन' का सुरुभिपूर्ण सम्पादन डॉ.सुनील कुमार सारस्वत कर रहे हैं, उसके मूल उद्‌भावक रामेन्द्र ही हैं। मानस चंदन के कई अंक प्रकाशित करने के बाद उसे अत्यंत सुयोग्य कवि, विद्वान् सम्पादक स्व.डॉ.गणेश दत्त सारस्वत को सौंप दिया था। पाण्डेय जी का सर्वभावेन सहयोग आज भी मानस चंदन को प्राप्त है। रायबरेली में डॉ.शम्भूनाथ, आई.ए.एस.(पूर्व जिला अधिकारी रायबरेली) के सहयोग से ऐतिहासिक मानस सम्मेलनों का आयोजन किया। रायबरेली के चन्द्रमणि साहित्य संस्थान में आमंत्रित कर पाण्डेय रामेन्द्र ने इन पंक्तियों के लेखक को सम्मानित किया था। इसे हम उनकी सहृदयता, उदारता ही कहेंगे।

पाण्डेय रामेन्द्र के पास संस्मरणों के भण्डार हैं। १९७२ में जब मैंने पी-एच.डी.शोध ग्रन्थ का लेखन कार्य पूरा कर लिया और चैप्टरवाइज उसे पर्यवेक्षक डॉ.देवकी नन्दन श्रीवास्तव को दिखा भी दिया तो भी टाइप से पूर्व उन्होंने पुनः हमारे ग्रंथ को देखना चाहा। उन्होंने विजयादशमी के अवकाश में मुझे तथा रामेन्द्र जी को एक साथ ही समय दिया। इस बार हमलोगों को अपने शोध प्रबंध का उनके समक्ष वाचन करना था। मैं उस समय डी.ए.वी. पी.जी.कालेज आजमगढ़ में कार्यरत था तथा डॉ.श्रीवास्तव प्राणकुटी, शिवपुरी लखनऊ में में रहते थे। डॉ.साहब की सुविधानुसार हम दोनों को बारी बारी से अपना शोध प्रबंध उन्हें सुनाना पड़ता था। मध्याह्न भोजन उपरान्त डॉ.श्रीवास्तव को जब मैं अपना शोध प्रबंध पढ़कर सुनाता था, तो डाक्टर साहब कभी कभी ऊँघने लगते थे तो मैं अपना वाचन रोक देता था। जब वे सचेत हो जाते थे तो पुनः वाचन करता था। पाण्डेय रामेन्द्र ने जब मुझे डॉ.साहब के निद्रित होने पर रुकते हुए देखा तो मुझे अलग ले जाकर समझाया- आप रुक क्यों जाते हैं? वे ऊँघते या निद्रित होते हैं- आपको इससे क्या लेना देना- आप पढ़ते जाइये। यही तो अच्छा मौका है अन्यथा कई सप्ताह लग जायेंगे। रामेन्द्र जी का यह व्यावहारिक सुझाव काम कर गया। शीघ्र ही पूरी थीसिस का वाचन सम्पन्न हो गया और वह टाइप में चली गई।

रामेन्द्र जी बड़े विनोदी स्वभाव के हैं। 'द्वारिका जाहुजू द्वारिका जाहुजू' सुनाकर वे हम सबको हंसने को बाध्य कर देते थे। आदरणीया स्व.शकुन्तला श्रीवास्तव (डॉ.देवकीनन्दन श्रीवास्तव की धर्मपत्नी) जिन्हें हमलोग भाभीजी कहा करते थे- डॉ.साहब से प्रतिदिन कहा करती थीं- सब्जीमंडी चले जाया कीजिए। एक सप्ताह के लिए सब्जी ले आया कीजिए। थोक में सब्जी अच्छी, सस्ती मिलेगी, रोज रोज का झमेला खत्म हो जायेगा। पारिवारिक व्यवस्था की दृष्टि से सुझाव ठीक ही था किन्तु 'नन्दन' जी के दार्शनिक स्वभाव और गरिमा के विपरीत था- तथापि पत्नी के रोज रोज के आग्रह से तंग आकर वे एक दिन सब्जी खरीदने गये और सप्ताह भर की सब्जी बड़े झोले में रिक्शे में लदवाकर घर आ गये। भाभीजी, सब्जी के लिए रास्ता ही देख रही थीं, नन्दन जी ने कहा- लो सब्जी ले आया, तुम्हारी इच्छा भी पूरी हो गई। किन्तु यह क्या? रिक्शा खाली था। सब्जी वाला झोला खिसक कर पीछे रास्ते में गिर गया था। नंदन जी ने भाभी जी से कहा- तुम भी सब्जीमंडी की एक ही रट लगाये थी-'द्वारका जाहुजू द्वारका जाहुजू आठहु जाम यहै झख तेरे'- नरोत्तमदास की यह पंक्तियां सुना दी। हम सभी लोग इस घटना को याद कर आज भी बिना हंसे रह नहीं पाते।

-सम्पादक

अटल-स्मृति अंक

'आर्य लोक वार्ता' का अगला अक्टूबर अंक भू.पू.प्रधानमंत्री युगनिर्माता अटल बिहारी वाजपेयी की पावन स्मृति को समर्पित होगा।

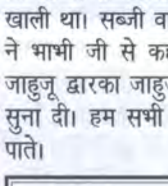

16 अगस्त 2018 को भारतीय राजनीति के शलाका पुरुष अटल जी के निधन का समाचार मिला। हम अटल जी के स्मृति चरणों में 'आर्य लोक वार्ता' की विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। उनकी स्मृति में उनके जीवन के विविध पक्षों से संदर्भित मौलिक सामग्री से युक्त विशेषांक प्रकाशित करने की घोषणा भी करते हैं। 'अटल-स्मृति-अंक' हर दृष्टि से पठनीय, संग्रहणीय, दिशादर्शक एवं प्रेरणाकेन्द्र होगा, ऐसा हमारा विश्वास है।

आर्य लोक वार्ता के समस्त पाठकों तथा सहयोगकर्ताओं से हमारा अनुरोध है कि अटल जी की स्मृति में अपने मौलिक, अप्रकाशित लेख, कविताएँ, संस्मरण, संदेश इत्यादि जो भी संभव हो, साफ तथा स्पष्ट अक्षरों में दिनांक 10.10.2018 तक हमारे पास हर हालत में पहुँचा दें।

-सं.

शुभाकांक्षा

आर्य लोक वार्ता का जुलाई अंक पढ़ा।

गीतकार नीरज जी के महाप्रयाण पर उन्हीं का आलेख अत्यंत प्रासंगिक लगा। इसमें सौन्दर्य, प्रेम और मृत्यु की दार्शनिक विवेचना अत्यंत भावपूर्ण लगी। नीरज को कई बार मंचों से सुनने का अवसर मिला। कविता पाठ की उनकी विशेष शैली थी, जो बहुत प्रभावी थी। मंचीय आयोजन उनके बिना सूने लगेंगे। मेरी भी उन्हें आत्मीय श्रद्धांजलि। 'वेदांजलि', 'मनुष्य का विराट रूप', 'ईश्वर ने दुनिया क्यों बनाई', 'विनय पीयूष' आदि सभी नियमित लेख शृंखलाएँ बहुत ज्ञानवर्द्धक और चिन्तन पूर्ण होती हैं। इनको मैं बार बार मनोयोग से पढ़ती हूँ, मुझे अपूर्व अनुभव मिलता है। 'काव्यायन' की सभी कविताएँ सराहनीय हैं, सभी कवियों को मेरी शुभकामनाएँ। 'शुभाकांक्षा' के विचार अत्यंत विद्वत्तापूर्ण होते हैं, अनेक पाठकों के बड़े सुन्दर विचार मिलते हैं। 'आर्य लोक वार्ता' के २१वें वर्ष में प्रवेश पर महती सफलता हेतु असीम बधाई।

आर्य लोक वार्ता को, लगा इक्कीसवाँ वर्ष।
फलित आपकी साधना, छाया मन में हर्ष।।

-नमिता वैश्य

खालेगाँव, मसकनवाँ, छपिया, गोण्डा, उ.प्र.

***

'आर्य्य लोक वार्ता' के मई, जून व जुलाई २०१८ अंकों को मैंने रुचि लेकर २-३ बार पढ़ा।

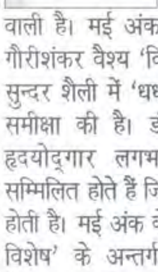

सदैव की भांति सभी अंकों की पठन सामग्री बहुत ही ज्ञान बढ़ाने वाली है। मई अंक के पृष्ठ ४ पर श्री गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र' जी ने बहुत ही सुन्दर शैली में 'धधकते पृष्ठ' काव्य की समीक्षा की है। डॉ.चन्द्रपाल शर्मा के हृदयोद्गार लगभग सभी अंकों में सम्मिलित होते हैं जिससे हर्ष की अनुभूति होती है। मई अंक के पृष्ठ ३ पर 'व्यक्ति विशेष' के अन्तर्गत डॉ.शर्मा जी का विवरण पढ़कर प्रसन्नता हुई। अन्तिम पृष्ठ पर एक रोमांचक समाचार 'शिक्षिका की कर्तव्य परायणता' पढ़कर पहले तो ड्राइवर की कायरता पर क्रोध आया किन्तु नन्हीं बच्चियों व शिक्षिका के साहस को भी पढ़ा। जुलाई अंक में मुखपृष्ठ पर गीतकार नीरज जी के महाप्रयाण पर प्रस्तुत लेख भी रुचिकर है। अंतिम पृष्ठ पर कर्मयोगी आनन्द कुमार आर्य जी व वैदिक प्रवक्ता पं.दीनानाथ शास्त्री ने अयोध्या में ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका स्मारक के निर्माण से सम्बन्धित जो अपील की है वह प्रभावशाली है। सभी आर्यों, महर्षि स्वामी दयानन्द जी के अनुयाइयों को ऐसे पवित्र स्मारक को २-३ वर्षों में ही भव्य रूप में खड़ा करने हेतु श्रद्धा से अपनी सहयोग राशि दान स्वरूप देना चाहिए। दान देने व प्राप्त करने की रूपरेखा तैयार की जा रही है। हम भी अपना योगदान समय समय पर देते रहेंगे। जून अंक के अन्तिम पृष्ठ पर प्रिय चि.मलयज त्रिपाठी के सुन्दर चित्र (नेवी यूनीफार्म) तथा उनके मर्चेन्ट नेवी में त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम में जो उसने स्थान पाया है उसके लिए हम सभी पुनः आशीर्वाद व बधाई देते हैं। इम इस बच्चे को गत आठ वर्षों से जानते हैं। हम उसके उज्ज्वल भविष्य की प्रार्थना परमपिता परमात्मा से करते हैं। लखनऊ समचार के अन्तर्गत सभी समाचार, विवरण पढ़कर आनन्द आया विशेषतया आर्ष गुरुकुल रसूलपुर कायस्थ लखनऊ में आयोजित आर्यवीर प्रशिक्षण शिविर व संस्कार निर्माण के समाचार को पढ़कर। अन्त में मैं सभी लेखकों, वैदिक विद्वानों, कवियों-रचनाकारों को धन्यवाद देती हूँ जिनकी प्रस्तुतियां आर्य्य लोक वार्ता के अंकों में प्रकाशित होती रहती हैं।

-कमलेश पाल

एम.एस-१२०, सेक्टर-डी, अलीगंज, लखनऊ

***

आर्य लोक वार्ता जुलाई अंक गीतकार

नीरज को समर्पित है। वे वाचिक परम्परा के जनकवि थे। उनकी कविता में सौंदर्य प्रेम के साथ दार्शनिक भाव की प्रधानता रही। उनके महाप्रयाण पर उनके सारगर्भित लेख 'दृष्टिकोण' (शीर्षक भूमिका) की प्रस्तुति उनके प्रति विनम्र श्रद्धांजलि है। कालजयी काव्य के अन्तर्गत 'जब सूना सूना' गीत की उपस्थिति प्रणम्य है। कवि-सम्मेलनों में मंचीय-रिक्तता बहुत दिनों तक उनका पुण्य स्मरण कराती रहेगी। मर्मी सम्पादकीय चिन्तन में अयोध्या में 'वेदभाष्य स्मारक' की स्थापना की काल प्रासंगिकता प्रमाणित की गई है जो गर्वानुभूति कराती है। स्वामी जी ने वेदभाष्य में अहल्या-इन्द्र-गौतम की कलंक कथा को मिथ्या एवं काल्पनिक बताया है तथा स्त्री-पुरुष के रूपकालंकार से सत्यबोध कराया गया है तथापि दुःखद है कि भागवत-वाचकों द्वारा कथा को वीभत्स ढंग से व्याख्यायित किया जा रहा है। अब इनको कौन रोके। जनमानस सत्य सुनने समझने का नहीं, ललित गायन वादन में सुख पाने का आदी हो चुका है। इस दिशा में वेदभाष्य स्मारक की महती भूमिका होगी। काव्यायन में 'भइया पानी नहीं बहाओ', 'श्रावण', 'बाल शिक्षा', 'पर्यावरण दिवस' आदि समसामयिक एवं रोचक कविताएँ हैं। रचनाकारों को साधुवाद। 'हवि दें हम' विनय पीयूष काव्यानुवाद अत्यंत आनन्द दायक है। भाई अमृत खरे की श्रम साधना स्तुत्य है। स्वाधीन भारत की नवोत्कर्ष संचेतना जागृत करे, चिन्तन को दृश्यरूप देने की आवश्यकता है। आर्य लोक वार्ता के २१वें वर्ष प्रवेश पर शुभकामनाएँ।

आर्य-दृष्टि से ही विकास हो, नव उत्कर्ष हमारा है।
कुरीतियों से पाखण्डों से, नित संघर्ष हमारा है।
स्वच्छ स्वस्थ सक्षम सशक्त, विज्ञान ज्ञान से पूरित हो-
पौरुष के पथ का अनुगामी भारत वर्ष हमारा है।।

-गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'

११७, आदिल नगर, विकास नगर, लखनऊ-२२

***

'मानो तो भगवान!- विचार करें इसमें

कैसा सत्य?' अस्तु, पहले जानने को तत्पर होना जरूरी है। मान लेना आसान है, पर जानने के बाद मानने में जैसी शाश्वता एक पक्षीय मान लेने में कदापि नहीं। पं. रामचन्द्र देहलवी एक विवेकी तार्किक व्यक्ति थे। उनके अकाट्य तर्कों ने उन्हें अमर बना दिया। हमारे डॉ.वेद प्रकाश आर्य दलील देने पर भी उन्हें स्वर्गीय नहीं लिखना चाहते! क्यों? क्या डॉ.वी.पी.आर्य बतायेंगे। 'कीर्तिः यस्य स जीवति'- जिसकी कीर्ति पताका फहराती रहती है, वह कभी मरता नहीं है। सदैव जीवित रहता है। देहलवी जी भी ऐसे ही कीर्ति पुरुष थे- वे सदैव जिन्दा रहेंगे। हमारे दिलोदिमाग में छाये रहेंगे। उनकी दलीलें आज दुनिया में अनेक जगहों पर प्रचलन में हैं। सिक्का उछाल कर फैसला करना तब उचित है, जब दोनों पक्ष राजी हों, अन्यथा वह क्यों कर उचित हो सकता है? ईश्वर को मानने या न मानने वाले दोनों हो सकते हैं। हर विवेकी व्यक्ति को यह उचित है कि वह पहले जाने और योग्य होने पर माने। एक तरफा मान लेने से वह चीज वैसी हो जाये, कतई स्वीकार नहीं होगी। इन सब बातों पर कोई भी स्वयं विचार करके सत्यासत्य से वाकिफ हो सकता है। ईश्वर की प्रकृति नहीं कि बोया जाये बबूल और फल आम के रूप में मिले। हर व्यक्ति को जो सहज है, अपने को जानो-ईश्वर को जानना गम्य नहीं, स्वयं को जानने पर ही ईश्वर को जाना जा सकता है। जो सच, उपयोगी और अच्छा है, उसे स्वीकार करना योग्य है। जो व्यर्थ है, उसका परित्याग करो। यही मानव जीवन का ध्येय होना चाहिए।

-बाँके बिहारी 'हर्ष'

अवध मोटर वर्क्स, सिविल लाइन्स, फैजाबाद

***

वीर रस से पूरित आपकी कविताओं

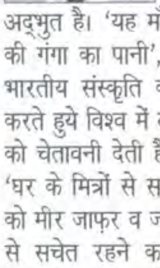

का संकलन 'धधकते पृष्ठ' आज के युग के युवा वर्ग को दस्तक दे रहा है। 'नयी पूजा : नयी आरती' के तेवर और उसका बांकपन अद्भुत है। 'यह माँ ही डालेगी, करुणा की गंगा का पानी', भारतीय चिन्तन व भारतीय संस्कृति की श्रेष्ठता प्रमाणित करते हुये विश्व में व्याप्त असुर शक्तियों को चेतावनी देती है। एक अन्य कविता 'घर के मित्रों से सावधान' हर भारतीय को मीर जाफ़र व जयचन्द जैसे व्यक्तियों से सचेत रहने का मशिवरा देती है। साथ ही दूसरी कविता 'सन्धान बदलना ही होगा' में लक्ष्य निर्धारण व लक्ष्यभेद करने की आवश्यकता को दर्शाया है। इसके अतिरिक्त अन्य कविता 'समझौते बाजी बन्द करो' समझौतावाद के विरुद्ध रणभेरी बजा रही है। सारी की सारी कवितायें अपने में अनूठी व संदेशवाहक हैं। छन्द की मर्यादा का पालन हुआ है। भाषा सरल, सुगम्य और प्रेरणादायक है। कविताओं का हर पद ओज से भरपूर है।

-कृष्णस्वरूप चौधरी

-चौधरी भवन, विनीतखण्ड-४, गोमतीनगर, लखनऊ

***

डॉ.वेद प्रकाश आर्य, सम्पादक, आर्य लोक वार्ता आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वानों में गणनीय विशिष्ट नाम है। उनके हृदय में आर्यजाति के उत्थान व राष्ट्रीय गौरव की भावना इतनी प्रबल है कि उनके गद्य एवं पद्य दोनों में उसकी अभिव्यक्ति स्पष्ट दीखती है। 'धधकते पृष्ठ' उनकी सद्य प्रकाशित कृति है, जिनमें उनकी बारह रचनाएँ संकलित हैं। इन रचनाओं को कवि ने समय-समय पर कवि सम्मेलन के मंच या अन्य आयोजन के अवसर प्रबुद्ध श्रोताओं के सम्मुख अपने ओजस्वी कंठ से प्रस्तुत किया है। इस दृष्टि से ये कविताएँ हिन्दी जगत में सन् १८५६ से लेकर १९६९ तक के कालखण्ड में ही हिन्दी साहित्य की धरोहर बन चुकी थीं, जिनको अब पुस्तक रूप में प्रस्तुत किया गया है।

पुस्तक के नामकरण में कवि की अपनी

सोच और अपने तर्क हो सकते हैं किन्तु मेरे मत से पुस्तक का नाम 'द्वादश आदित्य' होना चहिए था। सूर्य का आगमन जगत् में जीवन का संचार कर नई स्फूर्ति उत्पन्न करता है, अंधकार को भगाकर प्रकाश का निष्कंटक साम्राज्य स्थापित करता है, जगत् के प्राणिमात्र को नूतन कार्य एवं विचार का संकल्प प्रदान करता है। उसी प्रकार ये इतिहास के कटु सत्य, तथ्य, प्रबल तर्क, जन अभिलाषा की अभिव्यक्ति कराते हुए पाठक को पुनः उस कालखण्ड का अनुभव कराती हैं। मेरी आयु के भारतीय जानते हैं कि सन् १९६२ में चीन से बुरी तरह पराजित होने के बाद भारतीय जनमानस कितना निराश एवं हताश था। तत्कालीन प्रधान मंत्री पं.जवाहरलाल नेहरू का जननायक का रूप धूल- धूसरित हो गया था। वे स्वयं अत्यन्त दुःखी थे। अतः शीघ्र ही स्वर्गवासी हो गये। भारत का प्रधानमंत्रित्व एक सामान्य कद काठी के संस्कृतज्ञ व धोती धारी व्यक्ति को मिला, जिसको पाकिस्तान ने दुर्बल-कमजोर समझने की भूल कर ली क्योंकि शत्रु-देश का नेतृत्व सेना के पास था। 'आशाराम की आशा', सारे देश के राष्ट्रभक्तों की आशा है, जिसे माँ भारती के वीर सपूत लाल बहादुर शास्त्री ने पूरा करके देश को निराशा व अपमान के गहरे गर्त से बाहर निकाला था। आशाराम की माँ के कथन ने महाभारत की कुन्ती का स्मरण करा दिया, जब श्रीकृष्ण का संधि प्रस्ताव अस्वीकृत हो गया, तो विदुर के घर आये श्रीकृष्ण से कुन्ती ने कहा था- माधव! भीम और अर्जुन से मेरी ओर से कहना-क्षत्राणी इसी समय के लिए गर्भ धारण करती है। गुप्त जी की यशोधरा को इस बात का गर्व है कि 'स्वयं सुसज्जित करके रण में। प्रियतम के प्राणों के पण में। हमीं भेज देती हैं रण में। क्षात्रधर्म के नाते।' कवि ने भारत माँ का जो चित्र खींचा है वह भारतीय संस्कृति की परम्परा है। हम जब प्रातः पृथ्वी पर पहला पग रखते हैं तो माता का स्मरण- समुद्रवसने देवी। पर्वतस्तन मण्डले, विष्णुपत्नी नमस्तुभ्यं, पादस्पर्शं क्षमस्व में'। शब्दों से ही करते हैं। 'घर के मित्रों से सावधान' में कवि 'अप्रिस्य च पथ्यस्य' बोल रहा है। वस्तुतः अम्भी, जयचन्द, मीरजाफर, मानसिंह, माओ के मानसपुत्रों एवं पाकपरस्त भारतीयों के कलंक रूप माँ के कुपुत्रों की संख्या भी बहुत अधिक है। कवि कहीं दिनकर का वंशज लगता है, तो कहीं माखनलाल चतुर्वेदी या बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' का उत्तराधिकारी प्रतीत होता है।

कवि को अपनी बलिदानी परम्परा पर गर्व है। हाड़ारानी, लक्ष्मीबाई, ग्वालियर की मृगनयनी, कैकेयी, जीजाबाई, कस्तूरबा गांधी, द्रौपदी, पद्मिनी की गौरव गाथाओं से कवि का हृदय आप्लावित है। राजनेताओं ने सैनिकों की विजय को संधि की मेज पर पराजय में बदला है, यह टीस प्रत्येक भारतीय के मन में है। अतः कवि आह्वान करता है कि 'समझौतेबाजी बन्द करो' अथवा 'संधान बदलना ही होगा'। कवि जनता का चारण है, राजाओं या राज नेताओं का नहीं। वीररस की कवितायें प्रायः सामयिक समस्या को लेकर लिखी जाती हैं। पाकिस्तान या चीन के साथ युद्ध के समय लिखीं इन कविताओं में चीरने-फाड़ने, मारने-काटने की ललकार ही प्रायः सुनने को मिलती है। ऐसे अवसरों पर वीर रस के मंचीय कवियों की तो लाटरी खुल जाती है। मंच पर जो कवि जितनी ऊँची आवाज में ललकार लगाता है, वह उतना ही सफल माना जाता है, परन्तु इन कविताओं की जिन्दगी अल्पायु की होती है। परन्तु डॉ.आर्य की कविताओं में देशप्रेम, राष्ट्र पर बलिदान होने की इच्छा, जन्मभूमि को मातृभूमि मानने की वैदिक मान्यता जैसे शाश्वत भाव हैं। 'माताभूमि पुत्रोऽहम् पृथिव्या' वेद की यह वाणी कवि की कविताओं में निहित है। कवि के अनेक छन्द पाठकों के द्वारा समय समय पर उद्धृत होंगे। 'दिनकर' के 'कुरुक्षेत्र' व माखनलाल चतुर्वेदी की कविता 'पुष्प की अभिलाषा' को वक्तागण समय समय पर उद्धृत करते देखे जाते हैं। 'धधकते पृष्ठ' की भाषा संस्कृतनिष्ठ होते हुए भी प्रसाद व ओज से भरपूर है। कवि की छन्द पर पकड़ है। वह चमत्कार से बचकर चलता है। मेरा विश्वास है कि पुस्तक 'हल्दीघाटी', 'कुरुक्षेत्र' व 'झांसी की रानी' की परम्परा में गिनी जायेगी। 'स्मृति चरणों में' तो सबके मन की बात है। 'परिचय' कवि की राष्ट्रभक्ति का स्वहस्ताक्षरित प्रमाण पत्र है।

-डॉ.चन्द्रपाल शर्मा

सहयोग, सर्वोदय नगर, पिलखुआ-२४५३०४

***

स्व.गोपालदास नीरज जिनका निधन

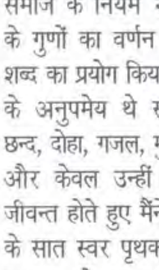

विगत १९ जुलाई को हो गया है। 'जातस्य हि ध्रुवो मृत्यु, मृत्युर्जन्म ध्रुवस्य च'(गीता)। महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज के नियम २ के अन्तर्गत ईश्वर के गुणों का वर्णन करते हुए 'अनुपम' शब्द का प्रयोग किया है। ऐसे गुण अनुपम के अनुपमेय थे स्व.नीरज जी। गीत, छन्द, दोहा, गजल, मुक्तक, रुबाइयाँ केवल और केवल उन्हीं की वाणी, स्वर से जीवन्त होते हुए मैंने देखा है जैसे सितार के सात स्वर पृथक पृथक तारों से एक नवलय को प्रकट करते हैं इसी प्रकार उनके प्रत्येक गीत, छन्द, गजल आदि के साथ सप्त स्वर अपनी लय से उनके कंठ से प्रस्फुटित होते थे। वे गीत व प्रस्तुतीकरण के मध्य एक स्वयं की सन्धि थे, उनके गीतों पर प्रस्तुतीकरण का एकाधिकार केवल उन्हीं का था। हमारे ऋषियों ने आदेश दिया है- देवस्य काव्यं पश्य न ममार न जीर्णाति- ऐसा काव्य जो कि प्रेम के रास्ते से होकर श्रेय, सत्य की ओर ही जाता है। इसे वे स्वयं स्वीकारते हैं-'जहाँ गद्य असमर्थ है, वहाँ कविता व गीत प्रकट होते हैं'-गीत सृष्टि की लय है। इस सृष्टि का प्रत्येक पदार्थ काव्यमय है, नदियां, जलप्रपात, सूर्य, चन्द्र तारे आदि। अनेकत्व से एकत्व की ओर जाना कविता करना है और एकत्व से अनेकत्व (संसार) की ओर जाना तर्क करना है, व्याख्या तर्क ही है। तर्क यानी टुकड़े करना, कविता करना यानी जोड़ना। स्व.नीरज के मुकाबले विकल्प अब कोई नहीं है। मेरी हार्दिक भावभीनी श्रद्धांजलि!

-प्रेमचन्द्र शर्मा

-बहादुर पुर, विकास नगर, लखनऊ

***

धारावाहिक-(85)

मनुष्य का विराट् रूप

-आनन्दकुमार-

३-अज्ञानी को ज्ञान से जीतो

गुरु नानक का कथन है- 'अन्तर तीरथ नानका, सोधन नाहीं मूढ़ा।' अर्थात्, मूढ़ लोग बाहरी तीर्थों को ही महत्व देते हैं, अपने हृदय के असली तीर्थ को नहीं खोजते। एक बार उन्हें ऐसे ही मूढ़ों का सामना करना पड़ा। देशाटन करते हुए वे मक्का शरीफ पहुँचे और काबे के सामने थककर विश्राम करने के लिये लेट गये। संयोग से उनके पैर काबे की ओर थे। उसी समय वहाँ कुछ अन्धभक्त लोग आये। उन्होंने गुरु नानक को ठोकरों से जगाकर कहा- काफिर, तू पवित्र स्थान का अपमान करता है? खुदा के घर के सामने पैर फैलाता है?

उनके दुर्व्यवहार से ज्ञानी गुरु तनिक भी अशान्त या भयभीत नहीं हुए। उन्होंने लेटे ही लेटे कहा-भाइयो, नाराज मत होवो; जिधर परमेश्वर न रहता हो, तुम लोग सोच विचार कर मेरे पैर उसी ओर कर दो- मुझे कोई आपत्ति नहीं होगी।

गुरु के तर्क से अज्ञानियों का जोश ठंडा हो गया। तब उन्हें होश आया और उन्होंने अतिथि का यथायोग्य सत्कार किया। ऐसे अवसरों पर सन्त कबीर का यह कथन सर्वथा मान्य है-

बहते को मत बहन दे, कर गहि ऐंचहु ठौर।
कहा-सुना मानै नहीं, वचन कहौ दुई और।।

४-मातृवत् परदारेषु

शिवाजी के जीवन की एक घटना है। एक मुसलमान युवती उनपर मुग्ध होकर एकान्त में प्रणय का हाव-भावन दिखाती हुई उनसे बोली-'मुझे आप जैसा एक पुत्र चाहिये।' इसके उत्तर में शिवाजी ने नम्रता पूर्वक कहा-'माँ, तुम मुझे ही आज से अपना पुत्र समझ लो।'

रमणी का मानस-मल धुल गया। उसके हृदय में शिवाजी के प्रति कामवासना से स्थान पर सात्विक प्रेम भर गया। अपनी पराजय से लज्जित होकर वह वहाँ से चली गई। शिवाजी ने अपने शील-सौजन्य से स्वधर्म की रक्षा के साथ-साथ एक अबला को भी पथभ्रष्ट होने से बचा लिया। इस आत्मविजय का महत्व कम नहीं है। संस्कृत के एक नीतिकार का कहना है कि मतवाले हाथी के मद को चूर करने वाले शूरवीर होते हैं; बहुत से लोग महाबली सिंह को भी पछाड़ने की शक्ति रखते हैं। किन्तु मैं बलवानों के सम्मुख दृढ़तापूर्वक घोषित करता हूँ कि कामदेव के मद को चूर्ण करने वाले बिरले ही होते हैं-

मत्तेभकुम्भदलने भुवि सन्ति शूराः
केचित् प्रचण्डमृगराजवधेऽपि दक्षाः।
किन्तु ब्रवीमि बलिनां पुरतः प्रसह्य
कन्दर्पदर्पदलने विरला मनुष्याः।।

५-उपकारहतस्तु कर्त्तव्यः

कविश्रेष्ठ शूद्रक ने लिखा है कि अपकारी को शस्त्र से न मारकर उपकार से मारना चाहिये-'शस्त्रेण न हन्तव्यः उपकारहतस्तु कर्त्तव्यः।' सज्जन इसी नीति से अपने विरोधी पर विजय प्राप्त करते हैं। वे बदला नहीं लेते, अपकारी का भी उपकार करते हैं।

एक बार अकबर के माननीय मंत्री रहीम पालकी में बैठकर कहीं जा रहे थे। रास्ते में किसी गरीब ने दूर से पालकी की ओर एक पंसेरी फेंकी। सिपाही उसे पकड़कर रहीम के पास लाये। दण्ड देना या डाँटना-फटकारना तो दूर रहा, उदार मन्त्री ने उसे पंसेरी-भर सोना दिया और बड़े प्रेम से यह प्रबोधन देकर विदा किया कि आगे से ऐसा अनुचित कर्म मत करना। वह गरीब अपनी भूल पर पश्चाताप करता हुआ रहीम के प्रति अत्यन्त कृतज्ञता की भावना लेकर चला गया। राजदरबारियों को रहीम के इस व्यवहार पर बड़ा आश्चर्य हुआ। उन्होंने कहा, जिसे प्राण दण्ड मिलना चाहिये था, उसे आपने पुरस्कार क्यों दिया?

रहीम ने हँसते हुए कहा- इसने मुझे पारस समझकर मेरी परीक्षा के लिए लोहे की पंसेरी मेरे पास भेजी थी। मैंने उसे सोना बना दिया। ऐसा न करने से मेरी हीनता प्रकट होती।

एक शक्तिशाली मुगल मंत्री की यह सहनशीलता और उदारता साधारण बात नहीं है। सामर्थ्यवान् होकर क्षमावान् भी होना बड़ा कठिन है। व्यास ने विदुर के मुख से कहलाया है कि दो प्रकार के व्यक्ति संसार में स्वर्ग के ऊपर भी स्थित होते हैं- एक तो जो शक्तिशाली होकर क्षमा करता है, और दूसरा जो दरिद्र होकर भी कुछ दान करता रहता है-

द्वाविमौ पुरुषौ राजन् स्वर्गस्योपरि तिष्ठतः।
प्रभुश्च क्षमया युक्तो दरिद्रश्च प्रदानवान्।।
-उद्योगपर्व

६-परापवाद की उपेक्षा

यूनान के प्रसिद्ध मनीषी अरस्तू से एक दिन किसी ने कहा कि अमुक व्यक्ति ने आपकी अनुपस्थिति में आपको गाली दी है। अरस्तू ने हँसकर कहा-वह मूर्ख चाहे तो मेरी अनुपस्थिति में मुझे पीट भी सकता है।

ऐसे मनस्वियों के सम्बन्ध में शुक्राचार्य ने कहा है-हे देवयानि, जो दूसरे से की हुई अनुचित निन्दा को सहन कर लेता है, सत्य मानो, वह समस्त संसार को जीत सकता है-

यः परेषां नरो नित्यमतिवादांस्तितिक्षते।
देवयानि, विजानीहि तेन सर्वमिदं जितम्।।
-महाभारत

कम से कम पीठ पीछे होने वाली निन्दा को ध्यान देना तो व्यर्थ ही है।

७-शान्तचित्त रहने का अभ्यास

यूनान में डायोजिनीज नामक एक तत्त्ववेत्ता हो गया है। वह प्रतिदिन एक पत्थर की मूर्ति के सामने कुछ देर तक भीख माँगता था। एक दिन उसके एक मित्र ने इस निरर्थक प्रतीत होने वाले कार्य का रहस्य पूछा। डायोजिनीज ने कहा-मैं इससे भीख माँगकर किसी से कुछ न मिलने पर शान्तचित्त रहने का अभ्यास कर रहा हूँ।

चित्तवृत्तियों का संयम इच्छामात्र अथवा कोरे ज्ञान से नहीं, निरन्तर अभ्यास से होता है। प्रायः लोग प्रिय वस्तु के न मिलने पर भीतर ही भीतर पीड़ित होने लगते हैं, विक्षुब्ध हो जाते हैं। यह एक मानसिक रोग है। इससे मुक्त होने का उपाय यही है कि अभ्यासपूर्वक चित्त को शान्त किया जाय। वसिष्ठ ने कहा है कि अपने भीतर ही यदि शान्ति मिल गई तो सारा संसार शान्त प्रतीत होता है-

पंचत्वमेव हि वरं लोके लाघववर्जितम्।
नामरत्वमपि श्रेयो लाघवेन समन्वितम्।।
-स्कन्दपुराण

प्रसिद्ध नीतिकार भर्तृहरि ने मनस्वी का यही लक्षण लिखा है-'जिसका मानस गम्भीर है, उसका लोग कैसा ही अपमान क्यों न करें, वह अपने प्रकृतिजात धैर्यगुण का कदापि परित्याग नहीं करता। जैसे प्रज्ज्वलित अग्नि को उलटा दो तो भी उसकी ज्वाला ऊपर को ही रहती है, नीचे नहीं जाती।'

(मनुष्य का विराट् रूप से साभार क्रमश)

व्याख्यान माला-7 (समापन किस्त)

ईश्वर ने दुनिया क्यों बनाई?

-शास्त्रार्थ महारथी पं. रामचन्द्र देहलवी-

प्रश्न मैंने सुन लिया और इसके बाद मैंने कहा कि 'मैं आपके समझने के लिए एक उदाहरण देता हूं। मान लीजिए आप बाजार जा रहे हैं। आपका बच्चा आपकी उंगली पकड़े आपके साथ जा रहा है। उसने बाजार में कलमी बड़े देखे। कलमी बड़े बहुत जायकेदार होते हैं किन्तु तेल में बनाये जाते हैं। बच्चे ने आपसे कलमी बड़े दिलवाने के लिये कहा। आपने उसे मना कर दिया और कहा कि तुझे कूकरखांसी *Hooping Cough* है। यह बड़े तेल के हैं तुझे नुकसान करेंगे। इसलिये यह नहीं लेने। बच्चा चुप हो गया। आप थोड़ा और आगे बढ़े। लेकिन बच्चा पीछे की ओर ही देखता चल रहा है। आपसे फिर बोला पिताजी दो पैसे के तो दिलवा दो। आपको जरा गुस्सा आया, कड़ककर कहा नहीं लेने हैं। बेवकूफ, इतनी बात समझाई तेरी समझ में नहीं आई। खांसी हो रही है, यह नहीं खाने। बच्चा फिर चुप हो गया। आपका एक मित्र बाजार में मिल गया। आप उससे बातें करने लगे। बच्चा बातों के बीच में फिर बोल उठा पिताजी दिलवा दो ना। आपको बहुत गुस्सा आया। आपने बच्चे के एक चांटा रसीद कर दिया और कहा कि तुझे नुकसान करेंगे। बच्चा बिलकुल चुप हो गया और साथ ही कुछ नाराज हो गया। आप घर आ गए। बच्चा घर आते ही बाहर निकल गया। उसने मुहल्ले के बच्चों को इकट्ठा किया। उनकी एक सभा की और आप बीती सुनाई। सभी बच्चों ने भी अपनी अपनी बातें सुनाईं और कहा कि हां बात बिल्कुल ठीक है कि हमारे मां-बाप हमारी इच्छाओं को पूरा करने में पूरी तरह नाकामयाब हुए हैं सभी ने एक मत होकर प्रस्ताव पारित किया और उसकी एक-एक प्रति सभी मां-बाप के पास भेज दी कि आपलोग हमारी इच्छाएं पूरी करने में *Miserably fail* हुए हैं। आपके पास भी एक प्रति उस प्रस्ताव की आई। आपने उसे पढ़ा। पढ़कर रद्दी की टोकरी में डाल दिया। मैंने पूछा कहिए उसे रद्दी की टोकरी में डालेंगे कि नहीं? उत्तर मिला 'डालेंगे'।

तो वे मुस्कराकर कहने लगे कि क्या भगवान् के सामने ऐसी ही मांगे रखते हैं? मैंने कहा 'हां' वह यह जानता है कि अमुक मांग बेवकूफाना है इसलिए वह पूरी नहीं होती चाहे हम हजार प्रार्थना करते हैं। वे उचित होंगी तो ही पूरी हो जाएगी वर्ना नहीं। जब मां-बाप ही सभी इच्छाएं पूरी नहीं करते तो ईश्वर जो सर्वज्ञ है वह हमारी सभी उचित अनुचित मांगे कैसे पूरी कर दे?

ईश्वर से आप मांगते जाइए। केवल आपकी वे ही मांगे पूरी होंगी जो उचित हैं। तो ईश्वर के बारे में कोई निर्णय तुरन्त या बिना सोचे समझे दे देना उसका अपमान करना है। ऐसे नहीं कहना चाहिए बल्कि यों कहना चाहिए कि उसने हमें इस योग्य नहीं समझा कि हमारी सभी इच्छाएं पूरी की जाएं। सभी इच्छाएं सबकी कैसे पूरी की जा सकती है। हजारों लोग अनेक दफ्तरों में नौकरी प्राप्त करने के लिए प्रार्थना पत्र देते हैं क्या सभी रख लिए जाते हैं? नहीं न, वहां लोग क्या कुछ कसर छोड़ते हैं, पागल हो जाते हैं इतनी कोशिशें करते हैं और अन्त में कह भी देते हैं साहब बहुत कोशिश की लेकिन नौकरी मिलती ही नहीं। खैर यहां तो चुनाव में आने के और भी कारण हो सकते हैं किन्तु वहां तो केवल एक ही कारण है और वह है जीवात्मा की अयोग्यता।

ओं शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

(समाप्त)

व्याख्यान माला-1

ईश्वर-पूजा का वैदिक स्वरूप

-शास्त्रार्थ महारथी पं. रामचन्द्र देहलवी-

माननीया बहिनो व भाइयो,

आज का विषय 'ईश्वर की पूजा का वैदिक प्रकार' हैं 'परमात्मा की उपासना का वैदिक प्रकार क्या है?' यह आपकी सेवा में वर्णन करूँगा। क्योंकि इसमें कुछ भाग ऐसा है जिसमें अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है इसलिए मेरा यह निवेदन है कि चारों ओर से अपना ध्यान हटाकर मेरी ओर केन्द्रित कर लें ताकि बात शीघ्र समझ में आए।

मैंने कल बताया था कि ईश्वर, जीव और प्रकृति तीन अनादि पदार्थ हैं। और इनके अनादि होने की वैज्ञानिक विधि का वर्णन किया था जिससे कोई इन्कार नहीं कर सकता। आज मैं उसे फिर दुहराता हूँ कि जो वस्तु सबसे छोटी है वह अविभाज्य है, उसका विभाग नहीं हो सकता और जो सबसे बड़ी है उसका भी विभाग नहीं हो सकता। यह दो कसौटियाँ हैं जिनसे किसी वस्तु के अनादित्व को जाना जा सकता है। इन दो कसौटियों को, मैंने आपके मस्तिष्क में, ताजा करने के लिए दुहरा दिया है इन दो कसौटियों से संसार की वस्तुओं को नाप लीजिए। दुनिया में दो प्रकार की चीजें हैं, एक जड़ और दूसरी चेतन। जो जड़ हैं वे ज्ञानशून्य हैं, उनमें ज्ञान नहीं है। दूसरी जो चेतन हैं जिनमें ज्ञान है। इन दोनों प्रकार की वस्तुओं को नाप लीजिए। चेतन में सबसे छोटा जीवात्मा है और सबसे बड़ा परमात्मा है। जड़ वस्तुओं में सबसे छोटा परमाणु है और सबसे बड़ा आकाश है। यह वैज्ञानिक विधि है जिससे मैंने इन तीनों पदार्थों को (ईश्वर, जीव और प्रकृति) अनादि एवं नित्य सिद्ध किया है। इन्हीं तीनों के बारे में आज बात आएगी। तनिक ध्यान से सुनिए।

हमारे दुर्भाग्य से या सौभाग्य से भारत में कई मतावलम्बी हैं। उनमें मुख्य रूप से ईसाई, मुसलमान, आर्यसमाजी व सनातनधर्मी हैं। शेष और जो हैं उनको इतनी मुख्यता नहीं है। मुसलमानों का, खुदा की भक्ति का अपना एक विधि है। ईसाइयों व मुसलमानों में कोई विशेष भेद नहीं है, थोड़ा ही भेद है इसलिए उन्हें मैं मुसलमानों से जुदा नहीं करता हूँ। सनातन धर्म व आर्य समाज में भी कोई फर्क नहीं है। हम चाहते हैं कि जो थोड़ा-सा भेद उनमें और हममें है, वह न रहे। उनको विशेष रूप से इस मजमून में शामिल कर लिया है। मुसलमानों से इस सम्बन्ध में पूछताछ करने पर पता चलता है कि वे खुदा की इबादत करते हैं। इबादत 'अबद' शब्द से बना है जिसके माने, अर्थ सेवक के हैं। इबादत का अर्थ हुआ कि हम अपने स्वामी के सामने अपने गुलाम और बन्दे होने को स्वीकार करते हैं। हम अपनी इबादत में कहते हैं कि ऐ खुदा! तू हमारा स्वामी है हम तेरे बन्दे हैं, हम तेरे सेवक हैं। यह एक प्रकार से भक्ति में हम स्वीकार करते हैं।

इस पर मैंने उनसे एक प्रश्न पूछा था। बहुत पुरानी बात है। दीनानगर की बात है। मौलवी अल्लाह दित्ता शास्त्रार्थ कर रहे थे। उनसे मैंने पूछा, "जरा यह फर्माइये कि जब आप नमाज पढ़ते वक्त खड़े होते हैं, जब आप रुकू करते हैं (घुटनों पर हाथ रखकर झुकते हैं) और जब आप सिजदा करते हैं, अपने माथे जमीन पर रख देते हैं तो इस सब से आपका क्या भाव है?" कहने लगे, "पंडित जी, हम खुदा का आदर करते हैं।" मैंने पूछा, "ऐसा करने से खुदा पर इसका क्या प्रभाव पड़ता है?" तो मौलवी साहब ने उत्तर दिया, "खुदा इस आदर से प्रसन्न होता है?" तो मैंने कहा कि आप आदर करके उसमें परिवर्तन लाते हैं। पहले वह खुश नहीं था, आपके आदर करने से वह खुश हो जाता है। आप उसमें परिवर्तन करते हैं और वह बदल जाता है। पहले वह खुश नहीं था, बाद में प्रसन्न हो जाता है। इस तरह उसमें प्रतिक्षण परिवर्तन होता रहता है क्योंकि न जाने कौन-कौन, कहाँ-कहाँ नमाज पढ़ रहा है, उसका आदर कर रहा है और उसमें प्रतिक्षण कुछ न कुछ परिवर्तन हो रहा है। ऐसा खुदा प्रतिक्षण परिवर्तनशील है। ऐसा खुदा परिवर्तनशील होगा। मौलवी जरा होश में आये और कहने लगे, "पण्डित जी, खुदा पर इसका कोई प्रभाव नहीं होता, इसका प्रभाव हम पर ही होता है।" मैंने कहा, "आप संभल गए अन्यथा आपका 'खुदा' खुदा न रहकर कुछ और ही हो जाता, परिवर्तित होकर न जाने क्या बन जाता?" याद रखिए, खुदा पर इस आदर लाने का कोई प्रभाव नहीं है।

खुदा से आप लाभ उठाइये। यदि इस बल्ब के सामने आपको कोई पुस्तक पढ़नी है तो आप इस प्रकार खड़े होइए जिससे कि आप अच्छे प्रकार से पढ़ सकें। यह आपका कर्तव्य है। बल्ब का नहीं। इस प्रकार खुदा में कोई तब्दीली नहीं होती। मैंने कहा कि आपकी विधि से तो आप एक्टर होंगे और खुदा एक्टेड अपॉन होगा। आप कर्ता होंगे वह कर्म हो जायगा। इसलिए यह मानने योग्य बात नहीं है कि खुदा पर आदर करने का कोई प्रभाव होता है। ईसाइयों के सम्बन्ध में मैंने आपको पहले ही कहा है कि उनकी विधि मुसलमानों से मिलती जुलती ही है। *(क्रमशः)*

काव्यायन

गीतऋषि-'नीरज'

❑गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'

साहित्यिक संसार में, उठी अचानक हूक।
नीरज-वाणी मौन है, हुई लेखनी मूक।।

गुज़र गया है कारवाँ, लेकर दास गोपाल।
नीरज-गीतों से सजी, टूट गई है माल।।

आयु-शतक में शेष थे, मात्र सात ही वर्ष।
नीरज-रवि असमय ढला, बिन पाए उत्कर्ष।।

देहदान संवेदना से गीतऋषि और हुए जीवन्त।
दानशीलता पाठ भी, पढ़ा गए श्रीमंत।।

छाए देश-विदेश में, करके कविता पाठ।
नीरज थे जिस मंच पर, जमें उसी के ठाठ।।

नीरज जी ने गज़ल को, दिया गीतिका नाम।
गीत-विधा समृद्ध की, रचकर काव्य ललाम।।

हिन्दी-उर्दू बीच में, नीरज जी थे सेतु।
फहरेगा उर-पटल पर, गीत सुपावन केतु।।

रिक्त हुए नीरज बिना, कवि सम्मेलन मंच।
उन्हें चुनें माँ शारदे, गीत-पीठ का पंच।।

लो 'विनम्र' श्रद्धाँजलि, अमर गीत ऋषि तात।
गीत रुदन हैं कर रहे, मुरझाए जल जात।।

–117, आदिल नगर, विकास नगर, लखनऊ–22

स्मृति ध्रुवतारा - 'नीरज'

❑कौशल कुमार

सबके मन में बसकर रहते, तुमने लम्बी उम्र गुज़ारी।
लो! गर्वित शोकार्त विदाई, प्यारदेव के प्रखर पुजारी।।

एक अभाव भरी दुखगाथा, काव्यजगत हतप्रभ सुनता है।
सहमी सहमी सी कविता है, गीत विकल हो सिर धुनता है।
पाठक, श्रोता सभी सन्न हैं, गीतों की सुनसान खुमारी।

नानाविध भूमिका निबाही, दुखद सुखद नाटक सब झेले।
चित्र विचित्र चरित्र जिये हैं, मनचाहे भाये अलबेले।
जल में रहकर रहे अभीगे, अहे! 'पद्मभूषण' संसारी।

तन तो नहीं रहा है लेकिन, अजर अमर मन की सजधज है।
मानवीय रसपगी प्रथा का, मादक रंजित व्रत 'नीरज' है।
उज्ज्वल स्मृतियों का ध्रुवतारा, कृतियों से नश्वरता हारी।

–एच–297, गंगानगर, मेरठ

ऋतु वर्णन

भाद्रपद

❑रमा आर्य 'रमा'

'रमा' भाद्रपद आ गया, ले पर्वों की भीर।
गरज-गरज कर बरसते, जलधर धरे न धीर।।

आयी बहुला चौथ है, पूजें बछरा गाय।
हलधर की पूजा भई, हल छठ रहे मनाय।।

योगिराज श्री कृष्ण के, जन्म दिवस का पर्व।
घर-घर मंगल गान है, जाति धर्म का गर्व।।

व्रत करती हरतालिका, नारी कुल का मान।
सुख-सुहाग के हित 'रमा', शिव-गौरा सम्मान।।

करते व्रत ऋषि पंचमी, चौदस 'रमा' अनन्त।
इन पर्वों के साथ में, भादौ का है अन्त।।

('रमा सतसई' से)

–417/10, निवाजगंज, चौक, लखनऊ

न आँच आये

❑डॉ. कैलाश निगम

स्वेच्छाधारिता नहीं
स्वतंत्रता का अर्थ बने
शुद्ध परमार्थ वाला
मन्तव्य चाहिये।
नंगे-तन, भूखे-पेट
जन-मन आकुल है
सुख-सुविधा से पूर्ण
देश भव्य चाहिये।
वैमनस्य-आग से
न आँच आये एकता को
विश्व-बन्धुता का भाव
मन नव्य चाहिये।
जागिये, जगाइये है
वक्त की आवाज़ यही
देश-हित यज्ञ में
सदैव हव्य चाहिये।

–4/522, विवेक खण्ड, गोमतीनगर, लखनऊ

तीन मुक्तक

❑अवधेश शुक्ल

दर्द को समझ कर मरहम लगाने वाले।
पोंछते पैर के तलवे हैं देखकर छाले।
उनका सम्मान सदा होता है जो दूजे के लिए
जीते हैं सदा, आँसू नयनों से छलकाने वाले।।

धर्म क्या है किसी को नहीं मालूम।
कर्म क्या है किसी को नहीं मालूम।
धर्म और कर्म के बीच अनजाने ही रहे।
मर्म क्या है किसी को नहीं मालूम।।

सारा संघर्ष ही सिमिट जाता।
बरसे पानी सा मन निथर जाता।
पानी श्रृंगार का गिरा जब भी,
पानी तलवार का उतर जाता।।

–अध्यक्ष, हिन्दी साहित्य परिषद
शुक्ल कुटीर, 2, ब्रह्मपुरी, सीतापुर

हर्ष-चतुष्पदी

मेरा पता

❑बाँके बिहारी 'हर्ष'

सब पूछते हैं 'हर्ष' मुझसे मेरा पता;
क्या पता दूँ जबकि मुझे ख़ुद नहीं पता?
पत्ता पत्ता जिसका है दे रहा पता-
कैसे कह दूँ उसे भला मैं लापता।।

दूर जाती है कहीं मुझसे मुफ़लिसी भी नहीं,
कमज़ोर हूँ ऐसा कि बस में बेबसी भी नहीं।
शुक्रे ख़ुदा है ज़िन्दगी नहीं है मगर ज़िन्दा हूँ-
श्रीमान् हूँ ऐसा कि साथ श्रीमती भी नहीं।।

–अवध मोटर वर्क्स, सिविल लाइन्स, फैजाबाद

कालजयी काव्य

'हल्दीघाटी' का अमर पृष्ठ

घासों की रोटी

❑श्रीश्यामनारायण पाण्डेय

इतने में अचल-गुहा से
शिशु-क्रन्दन की ध्वनि आई?
कन्या के क्रन्दन में थी
करुणा की व्यथा समाई।।

भालों से, तलवारों से,
तीरों की बौछारों से,
जिसका न हृदय चंचल था
वैरी-दल ललकारों से।।

दो दिन पर मिलती रोटी
वह भी तृण की घासों की,
कंकड़-पत्थर की शय्या,
परवाह न आवासों की।

लाशें पर लाशें देखीं,
घायल कराहते देखे।
अपनी आँखों से अरि को
निज दुर्ग ढाहते देखे।।

तो भी उस वीर-व्रती का
था अचल हिमालय-सा मन।
पर हिम-सा पिघल गया वह
सुनकर कन्या का क्रन्दन।।

भूखे - प्यासे - कुम्हलाये
शिशु को गोदी में लेकर।
पूछा, "तुम क्यों रोती हो
करुणा को करुणा देकर"।

अपनी तुतली भाषा में
वह सिसक-सिसककर बोली,
जलती थी भूख तृषा की
उसके अन्तर में होली।

'हा छही न जाती मुझछे
अब आज भूख की ज्वाला।
कल छे ही प्याछ लगी है
हो लहा हिदय मतवाला।।

माँ ने घाछों की लोती
मुझको दी थी खाने को,
छोते का पानी देकल
वह बोली भग जाने को।।

अम्मा छे दूल यहीं पल
छूकी लोती खाती थी।
जो पहले छुना चुकी हूँ,
वे देछ-गीत गाती थी।।

छच कहती केवल मैंने
एकाध कवल ही खाया था।
तब तक बिलाव ले भागा
जो इछी लिए आया था।।

छुनती हूँ तू लाजा है
मैं प्याली छौनी तेली।
क्या दया न तुझको आती
यह दछा देखकल मेली।।

लोती थी तो देता था,
खाने को मुझे मिथाई।
अब खाने को लोती तो
आती क्यों तुझे लुलाई।।

वह कौन छत्रु है जिछने
छेना का नाछ किया है?
तुझको, माँ को, हँम छभको,
जिछने बनबाछ दिया है।।

यक छोती छी पैनी छी
तलवाल मुझे भी दे दे।
मैं उछको माल भगाऊँ
छन मुझको लन कलने दे।।'

कन्या की बातें सुनकर
रो पड़ी अचानक रानी।
राणा की आँखों से भी
अविरल बहता था पानी।।

उस निर्जन में बच्चों ने
माँ-माँ कह-कहकर रोया।
लघु-शिशु-विलाप सुन-सुनकर
धीरज ने धीरज खोया।।

वह स्वतंत्रता कैसी है
वह कैसी है आजादी।
जिसके पद पर बच्चों ने
अपनी मुक्ता बिखरा दी।।

('हल्दीघाटी' महाकाव्य से साभार)

वीर रसावतार श्रीश्यामनारायण पाण्डेय के प्रति

कवि कुलभूषण को प्रणाम

❑डॉ. वेद प्रकाश आर्य

जब भारत जननी खड़ी हुई थी,
आँखों में ले अश्रुधार।
पर निकल रही थी कवि कंठों से
मादक मदिरा की पुकार।

तब तेरे स्वर में किलक उठी-
वह काली खप्पर वाली थी;
कवि, तेरी हल्दीघाटी में तब
गरम लहू की लाली थी।।

तुझसे प्रताप का तेज मिला
जननी-सेवा अनुरक्ति मिली,
तुझसे इस सोये भारत को-
रणधीर शिवा की शक्ति मिली।

जग ने जौहर में देख लिया-
गोरा बादल के तीरों को;
कर दिया 'तुमुल' में रथारूढ़
त्रेतायुग के दो वीरों को।

तुलसी सा जन मन में उतरा-
उस नवयुग पूषण को प्रणाम।
जो दूषण के प्रतिकूल रहा-
उस कविकुल भूषण को प्रणाम!!

–प्रधान सम्पादक, आर्य लोक वार्ता, लखनऊ

राजस्थान-समाचार

आर्य समाज ने बांटे स्कूल किट

बैग पाकर बच्चे हुए प्रसन्न

कोटा, ११ अगस्त। 'आप सभी भाग्यवान हैं कि आप अपने ही गाँव में पढ़ रहे हैं। अनेक लोगों को यह सुविधा उपलब्ध नहीं होती। आप बड़े होकर अच्छे इंसान बनें।' उक्त विचार खेड़रसूलपुर के राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय में मुख्य अतिथि डी.ए.वी.स्कूल की प्राचार्या सरिता रंजन ने छात्रों को सम्बोधित करते हुए व्यक्त किये। आर्य समाज जिला सभा कोटा के प्रतिनिधियों, जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा, समाजसेवी डॉ. वेद प्रकाश गुप्त, आर्यसमाज महावीर नगर के प्रधान आर.सी.आर्य, लालचंद आर्य पूर्व मंत्री तलवंडी, किशन आर्य, डी.ए.वी.के धर्मशिक्षक आचार्य शोभाराम, आर्यसमाज खेड़ारसूलपुर के प्रधान रामनारायण कुशवाह, मंत्री बंसीलाल, कैलाश नामा, घनश्याम नामा ने छात्रों को स्कूल बैग, कॉपियां, पेन वितरित किये। स्कूल बैग पाकर बच्चों के चेहरे खिल उठे।

अर्जुनदेव चड्ढा ने छात्रों से कहा कि माता-पिता के बाद आदरणीय होता है गुरू। गुरू ही अंधकार से ज्ञान के उजाले की ओर ले जाते हैं। शिक्षा का महत्व सभी मानते हैं अतः अनुशासित रहकर शिक्षा प्राप्त करें और जीवन को सफल बनाएं। डॉ.वेद प्रकाश गुप्त ने कहा कि स्वस्थ रहने के लिए स्वच्छता से रहना सबसे बड़ा उपाय है। अपने घर-ग्राम-शहर को स्वच्छ रखें। आचार्य शोभाराम ने सामूहिक गायत्रीमंत्र का पाठ कराया। विद्यालय के प्रिंसिपल मोरमुकुट सिंह हाड़ा ने आर्य समाज व अतिथियों का आभार व्यक्त किया। शांतिपाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। *(अर्जुनदेव चड्ढा)*

आर्य समाज ने बांटे कपड़े के थैले

कोटा, ८ अगस्त। आर्य समाज जिला सभा के तत्वावधान में कैथून के हाट बाजार में लोगों को पालीथीन के कैरीबैग का इस्तेमाल नहीं करने के लिए प्रेरित किया तथा बड़ी संख्या में महिलाओं को कपड़े के थैले आर्य समाज द्वारा वितरित किये गये। आर्य समाज के प्रतिनिधि अर्जुनदेव चड्ढा, श्रीमती सरिता रंजन गौतम, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, आर.सी.आर्य, लालचन्द आर्य, आचार्य शोभाराम आर्य, रामनारायण कुशवाह, बंसीलाल रेनवाल, किशन आर्य, कैलाश नामा आदि कैथून के हाट बाजार सब्जीमंडी पहुँचे। सब्जीमंडी में आवाज लगाकर महिलाओं को एकत्रित कर सरिता रंजन गौतम ने उन्हें पॉलीथीन से होने वाली हानियों की जानकारी देते हुए बताया कि जहां एक ओर पर्यावरण दूषित हो रहा है वहीं दूसरी ओर कचरे के ढेर में पड़ी पॉलीथीन को खाकर पशु बीमार होते हैं व उनकी मृत्यु हो जाती है। अर्जुनदेव चड्ढा ने बताया कि वर्षा के मौसम में नालियों का पानी पॉलीथीन की वजह से जाम हो जाता है जिससे गंदा पानी सड़कों पर फैलता है व घरों में भरता है। पॉलीथीन के टुकड़े खेतों और अन्य उर्वरक भूमि तक जाते हैं और भूमि को कुप्रभावित करते हैं। इसलिए पॉलीथीन की थैलियों को उपयोग में न लाकर कपड़े के थैलों का उपयोग करें।

डॉ.वेद प्रकाश गुप्ता ने कहा कि घरों के बाहर फेंके गए कचरे के ढेर पर जानवर मुंह मार-मार कर गंदगी फैलाने में अहम भूमिका निभाते हैं वहीं कचरे में सड़ांध होने पर मक्खियां व मच्छर भिनभिनाते हैं जो अनेक रोगों को जन्म देते हैं। इसलिए हमें पालीथीन के दुष्प्रभाव को रोकने के लिए इनका प्रयोग बन्द करना होगा। *(अर्जुनदेव चड्ढा)*

दिल्ली-समाचार

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली-2018

25-26-27-28 अक्टूबर, 2018

तदनुसार कार्तिक कृष्ण 1,2,3,4 विक्रमी 2075

स्थान-स्वर्णजयन्ती पार्क, सेक्टर-10, रोहिणी, दिल्ली

अक्टूबर-२०१८ में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन अपने आप में बहुत बड़ा सम्मेलन होगा। सम्पूर्ण विश्व से २ लाख से अधिक आर्य जनों के इसमें पहुँचने की आशा है। इसे देखते हुए सम्मेलन की सभी व्यवस्थाओं एवं सुविधाओं के लिए आप सबका सहयोग सादर आमंत्रित है। सभी आर्यजनों, आर्य संस्थाओं, आर्य समूहों, प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं और आर्य महिला सभाओं संस्थाओं से निवेदन है कि अपनी सहयोग राशि चैक-बैंक ड्राफ्ट 'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा-महासम्मेलन-२०१८' के नाम बनाकर भेजने की कृपा करें। यह सम्मेलन आपका है और आप के सहयोग से ही यह हर प्रकार से अद्वितीय बन सकता है। कृपया अपनी सहयोग राशि 'संयोजक' के नाम 'अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१' के पते पर भेजें। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को दिया गया समस्त दान आयकर अधिनियम की धारा ८०जी के अन्तर्गत आयकर छूट प्राप्त है। **-संयोजक**

सीतापुर-समाचार

मुजीब सीतापुरी का सम्मान एवं एकल काव्यपाठ

सीतापुर, रविवार, ५ अगस्त। हिन्दी साहित्य परिषद के मंत्री मुजीब सीतापुरी इकहत्तर वर्षीय कवि का एकल काव्य पाठ हिन्दी सभा के नरोत्तम सभागार में सभा अध्यक्ष आशीष मिश्र द्वारा सारस्वत सम्मान के साथ किया गया। आपने पीतांबरी मुजीब सीतापुरी को ओढ़ाकर गुलाब की फूलमाला द्वारा स्वागत किया तथा सम्मान में स्मृति चिन्ह भेंट किया।

अवधेश शुक्ल, अध्यक्ष हिन्दी साहित्य परिषद ने मुजीब का साहित्यिक सामाजिक परिचय दिलाते हुए भावोपहार करन सिंह द्वारा भेंट कराया। सरल सहज स्वभाव के कवि मुजीब जी ने कहा कि 'रोम रोम में हिन्दी रमी है, आत्मा हिन्दी, शरीर है हिन्दी'। कुछ ऐसे इंसान मिले हैं, फितरत से पहचान मिले हैं। आओ हम एक बनें, आओ हम नेक बनें। तथा सीतापुर की इस पावन धरती पावन इसको मेरा प्रणाम। अपनी बहुचर्चित मंचीय रचना के साथ दो घंटे का एकल कविता पाठ किया। संचालन रजनीश मिश्र हिन्दी सभा के मंत्री ने किया।

हिन्दी सभा में पौधारोपण मुजीब से कराया गया। इस अवसर पर गीता जी, लाल बहादुर, भगवती प्रसाद, अनिल, कौशलेन्द्र अवस्थी, पंकज प्रसून तथा मानवाधिकार एसो. के अध्यक्ष राकेश गुप्त, चन्द्रगुप्त श्रीवास्तव एडवोकेट ने मुजीब सीतापुरी को शुभकानाएँ प्रदान कीं। *(अवधेश शुक्ल)*

लखनऊ-समाचार

डॉ.सुरेश सम्मानित

०५.०५.१८। सुन्दरम साहित्यिक सांस्कृतिक एवं सामाजिक संस्था के तत्वावधान में मासिक काव्यगोष्ठी एवं सम्मान कार्यक्रम अध्यक्ष नरेन्द्र भूषण के जानकीपुरम स्थित आवास पर हुआ जिसके मुख्य अतिथि आशोक पाण्डेय अशोक तथा विशिष्ट अतिथि अशोक कुमार चौधरी रहे। कार्यक्रम में डॉ. सुरेश प्रकाश शुक्ल को 'सुन्दरम रत्न' सम्मान से अलंकृत किया गया। काव्य गोष्ठी का शुभारम्भ मंजुला मंजर की वाणी वन्दना से हुआ जिसमें सम्मानित कवि द्वारा गीत एवं अवधी काव्यपाठ किया गया। तदुपरान्त अन्य कवियों ने अपना काव्यपाठ प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन हरिमोहन वाजपेयी माधव ने किया। *(विनम्र)*

माता सियादुलारी स्मृति

पंजाब नेशनल बैंक के क्षेत्रीय प्रबंधक श्री आदित्य प्रकाश की माताजी सिया दुलारी श्रीवास्तव का २६.०७.१८ को लगभग ८० वर्ष की आयु में निधन हो गया। वे अपने पीछे तीन पुत्रों-आदित्य, शरद एवं सत्यप्रकाश को छोड़ गई हैं।

माता सियादुलारी जीकी पुण्यस्मृति में २६.०७.१८ को ११ बजे उनके आवास सेक्टर-२० इन्दिरा नगर, (उजाला अपार्टमेंट के सन्निकट) पर वैदिक यज्ञ का विधान डॉ.वेद प्रकाश आर्य के आचार्यत्व में सम्पन्न हुआ। आदित्य प्रकाश, अपनी पत्नी श्रीमती सुषमा श्रीवास्तव (बैंक मैनेजर, पी.एन.बी.) के साथ यजमान आसन पर बैठे तथा वैदिक यज्ञ विधान की सभी प्रक्रियाएँ पूरी कीं। साथ ही- शरद एवं सत्यप्रकाश ने भी सपरिवार यज्ञ के अन्य आसनों को ग्रहण किया। बड़ी संख्या में परिवार के सदस्यों तथा बैंक कर्मचारियों ने यज्ञ में आहुतियाँ देकर श्रद्धांजलि अर्पित की। आचार्य जी ने मृत्यु तथा पुनर्जन्म के विषय में वैदिक विचारधारा पर प्रकाश डाला। माता जी की स्मृति में दो मिनट मौन रहकर सभी ने संवेदना व्यक्त की। शान्ति यज्ञ का संयोजन श्री अतुल कुमार चौधरी द्वारा किया गया। विशिष्ट व्यक्तियों में श्रीमती सुधा चौधरी एवं कृष्णस्वरूप चौधरी(गोमती नगर), हरेन्द्र नाथ श्रीवास्तव के नाम प्रमुख हैं।

टाण्डा-समाचार

आर्य कन्या इण्टर कॉलेज,टाण्डा में स्वतंत्रता दिवस

''स्वतंत्रता आन्दोलनों के संदर्भ में आज भले ही अनेक महापुरुषों की चर्चा होती हो किन्तु वास्तविकता यह है कि स्वराज्य का प्रथम उद्घोष स्वामी दयानन्द सरस्वती ने ही किया था, जिसका आगे चलकर लोकमान्य तिलक, महात्मा गांधी, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस आदि ने विस्तार किया।''

ये हैं वे शब्द जो स्वतंत्रता दिवस के स्वर्ण प्रभात में सामाजिक सद्भाव की प्रसिद्ध शिक्षा संस्था मिश्रीलाल आर्य कन्या इंटर कॉलेज तथा डी.ए.वी.एकेडमी टाण्डा द्वारा आयोजित स्वतंत्रता दिवस समारोह के ध्वजारोहण के अवसर पर कर्मयोगी श्री आनन्द कुमार आर्य ने कहे। आपने कहा- स्वामी दयानन्द सरस्वती का यह मानना था कि नारी शिक्षा के बगैर न स्वतंत्रता स्थिर रह सकती है और न समाज कभी तरक्की कर सकता है। अतः उन्होंने नारी शिक्षा केन्द्रों की स्थापना की शुरुआत की जिसे उनके अनुयाइयों ने आगे बढ़ाया। इसी श्रृंखला में स्वतंत्रता सेनानी बाबू मिश्रीलाल आर्य न टाण्डा में आर्य कन्या पाठशाला की स्थापना की जो आज अपनी अच्छी पढ़ाई तथा अनुशासन के लिए प्रसिद्ध है। आपने शिक्षा संस्थाओं के कर्मचारियों, शिक्षकों, छात्र-छात्राओं को आजादी के इस दिवस पर बधाई दी।

डॉ.प्रशिक्षा, प्रिंसिपल, मिश्रीलाल आर्य कन्या इंटर कॉलेज तथा श्रीमती अनीता सिंह, प्रिंसिपल डी.ए.वी.एकेडमी टाण्डा ने विद्यालय परिवार के समस्त सदस्यों को बधाई एवं शुभकामनाएँ दीं। इस अवसर पर छात्रों में मिष्ठान्न वितरण किया गया।

फैजाबाद-समाचार

वीना वर्मा ने पूरे किये जीवन यात्रा के 75 वर्ष

अवधपुरी, फैजाबाद, १५.०८.१८। देश की स्वतंत्रता ने ७१ वर्ष पूरे किये और मिश्रीलाल आर्य कन्या इंटर कॉलेज, टाण्डा की पूर्व प्रधानाचार्या वीना वर्मा ने अपने यशस्वी जीवन के ७५ वर्ष पूरे कर लिये हैं। राष्ट्रपति पुरस्कार एवं सम्मान प्राप्त करने वाली सुश्री वीना वर्मा को इस अवसर पर आर्य कन्या इंटर कॉलेज एवं डी.ए.वी.एकेडमी, टाण्डा की ओर से हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ अर्पित की गईं।

बताते चलें- स्व.गुणवती ग्रोवर के सेवानिवृत्त होने के बाद सुश्री वीना वर्मा ने इस प्रतिष्ठित संस्था की कमान सँभाली और अपनी श्रम-निष्ठा के बलबूते इसे बुलंदियों तक पहुँचाया। आपके आवास पर आयोजित प्रीतिभोज में बड़ी संख्या में शिक्षा, समाज संस्कृति से जुड़े व्यक्तियों ने पहुँचकर अपनी शुभकामनाएँ व्यक्त कीं और आपके सुन्दर स्वस्थ एवं दीर्घ जीवन के लिये ईश्वर से प्रार्थनाएँ कीं।

लखनऊ-समाचार

मेरठ गौरव प्रियपाल की 107वीं जयन्ती

११ अगस्त, २०१८, योगाश्रम अलीगंज, लखनऊ में पाल प्रवीण के पिता मेरठ गौरव श्री प्रियपाल का जन्म दिवस एक पर्व के रूप में मनाया गया। प्रातः ११ बजे से यज्ञ का वैदिक विधान डॉ.वेद प्रकाश आर्य के आचार्यत्व एवं श्रीमती कमलेश पाल एवं श्री पाल प्रवीण (यजमान), प्रमोद कुमारी, शशि गुप्त, गीता दरियानी, सुरेशचन्द्र मिश्र, श्रीमती मिश्र, शिवशंकर लाल वैश्य के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ। यज्ञोपरान्त प्रमोद कुमारी एवं महात्मा प्रेममुनि के सुन्दर भजनों के पश्चात् आचार्य विश्वव्रत शास्त्री, संस्थापक आर्ष गुरुकुलम् ने यज्ञ की सार्वभौमिकता पर प्रकाश डाला तथा श्री पाल प्रवीण ने अपने पिता के जीवन के अनेक अनुकरणीय प्रसंगों को प्रस्तुत किया। डॉ.वेद प्रकाश आर्य ने श्री प्रियपाल की महानता एवं लोकप्रियता की चर्चा करते हुए स्वरचित एक छंद सुनाया; जिसकी दो पंक्तियाँ इस प्रकार हैं-

मेरठ भूमि पुकार रही, वह मेरा मवाना का लाल कहाँ
हर जर्रा मवाना का बोल रहा- प्रियपाल कहाँ, प्रियपाल कहाँ?

बताते चलें कि अपने पिता प्रियपाल के महान् व्यक्तित्व के प्रति श्रद्धाभिभूत होने के कारण उनके सभी पुत्र पाल प्रवीण, कर्नल पाल प्रमोद, कै.पाल प्रदीप, प्रभात, प्रशान्त अपने नामों के पूर्व पाल शब्द का प्रयोग करते हैं तथा उनकी स्मृति को प्रतिक्षण अपने साथ बनाये रहते हैं।

कार्यक्रम का संयोजन प्रियपाल जी के सुपौत्र श्री अभिषेक एवं पौत्रवधू गीतांजलि द्वारा किया गया। अभिषेक-गीतांजलि की पुत्री कु.देविका द्वारा अंग्रेजी में लिखित भावपूर्ण संदेश श्रीमती गीतांजलि ने पढ़कर सुनाया। सुरुचिपूर्ण प्रीतिभोज के साथ सम्पन्न इस पर्व के अन्य विशिष्ट अतिथि थे- विनोद कुमार शुक्ल, पुरुषोत्तम केशवानी, पीयूष निगम, द्वारिका प्रसाद शुक्ला।

लखनऊ-समाचार

कश्मीर से कन्याकुमारी तक भारत में एक ही संविधान हो। -ठाकुर विक्रम सिंह

लखनऊ, १३ अगस्त। राष्ट्र निर्माण पार्टी, नई दिल्ली के राष्ट्रीय अध्यक्ष ठाकुर विक्रम सिंह ने प्रेसक्लब में आयोजित पत्रकार सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए राष्ट्र निर्माण पार्टी की नीतियों और विचार धारा का खुलासा किया। आपने कहा- राष्ट्र निर्माण पार्टी चाहती है कि सम्पूर्ण भारतवर्ष में एक ही संविधान लागू हो। विदेशी घुसपैठियों की पहचान कर उन्हें निर्वासित किया जाय और देश के विरुद्ध षडयंत्र करने वालों को मृत्युदंड दिया जाय। निरपराध प्राणियों की हत्या नहीं की जाय और शाकाहार के लाभों से जनता को परिचित कराया जाय। शिक्षा मुफ्त और अनिवार्य हो। भारतीय भाषाओं के साथ हिन्दी को विशेष प्रोत्साहन दिया जाय। स्वदेशी चिकित्सा पद्धतियों को आगे बढ़ाया जाय और प्रोफेशनल पढ़ाई पूर्ण होने तक सारा खर्च पूरी तरह सरकार वहन करे। किसानों को अधिकार दिया जाय कि वह अपनी फसल का मूल्य स्वतः निर्धारित करे। धर्म, जाति, भाषा, राज्य आदि के आधार पर कोई आरक्षण न दिया जाय। भारत एक राष्ट्र है, सभी नागरिक समान हैं। भारत को अपराध मुक्त बनाया जाय तथ सभी फैसले ६ महीने की अवधि में दिये जांय। भारतीय सेना को संसार में सर्वश्रेष्ठ बनाया जाय। प्राचीन परम्परा और संस्कृति-सभ्यता के आधार पर नई पीढ़ी को शिक्षित किया जाय। नदियों को एक दूसरे से जोड़ने का कार्य शीघ्र पूर्ण किया जाय। २४ घंटे बिजली उपलब्ध कराने तथा सड़क और पेयजल व सिंचाई के जल की व्यस्था राष्ट्र निर्माण पार्टी की प्राथमिकता होगी। आपने कहा- हमारा लक्ष्य भारत को विश्व का नम्बर एक देश बनाना है।

प्रेस क्लब में 'आर्य लोक वार्ता' के प्रतिनिधि आनन्द चौधरी एडवोकेट ने ठाकुर विक्रम सिंह तथा उनके साथ आये हुए श्री आनन्द कुमार (पूर्व आई.ए.एस.) का स्वागत किया। इस अवसर पर आचार्या डॉ.निष्ठा विद्यालंकार, पाल प्रवीण एवं अभिषेक मौजूद थे।

आर्यजन राजनीति में निर्णायक भूमिका निभायें

१२ अगस्त। राष्ट्र निर्माण पार्टी के अध्यक्ष ठा.विक्रम सिंह ने आर्य समाज सदर (कैंट) में जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा की अन्तरंग बैठक को सम्बोधित करते हुए देश के नैतिक अधःपतन और बढ़ते हुए अज्ञान, पाखंड, अंध विश्वास पर घोर चिन्ता प्रकट की। आपने कहा- महर्षि दयानन्द सरस्वती के स्वप्नों को साकार करने के लिए आज की परिस्थितियों में आर्य समाज विचारधारा के लोगों को राजनीति में तटस्थ न रहकर सक्रिय भूमिका निभानी होगी। राष्ट्र निर्माण पार्टी में आर्य समाज के सदस्यों का हार्दिक स्वागत है।

इस अवसर पर जिला सभा के प्रधान श्री नवनीत निगम एवं श्री आनन्द कुमार (पूर्व आई.ए.एस.) उपस्थित थे। *(आनन्द चौधरी, एडवोकेट)*

नरेश दीक्षित को श्रद्धांजलि

पतंजलि योग समिति (पूर्वी क्षेत्र) के अध्यक्ष श्री पीयूषकान्त श्रीवास्तव एवं गोपालकृष्ण श्रीवास्तव तथा जवाहरलाल शाह ने संयुक्त रूप में एक वक्तव्य द्वारा नरेश दीक्षित (विकास खण्ड, गोमती नगर) के आकस्मिक निधन पर गहरा दुःख प्रकट किया है। स्व.दीक्षित पंजाब नेशनल बैंक में कार्यरत थे और अपनी सत्य निष्ठा के लिए जाने जाते थे। आपने योग समिति के प्रारंभिक वर्षों में आयोजित योग शिविरों में विशेष योगदान देकर ख्याति अर्जित की। शोक प्रस्ताव के माध्यम से स्व.दीक्षित की आत्मा की सद्गति एवं शोकाकुल परिवार की धैर्य क्षमता हेतु परम पिता से प्रार्थना की गई। 'आर्य लोक वार्ता' की श्रद्धांजलि!

'रमा जी' कर रही हैं स्वास्थ्य लाभ

'आर्य लोक वार्ता' की प्रमुख स्तम्भ, वरिष्ठ कवयित्री एवं लेखिका श्रीमती रामा आर्य 'रमा' इन दिनों आकस्मिक रूप में अस्वस्थ हो गई थीं। एक छोटे से ऑपरेशन से गुजरने के बाद वे अब शनैः शनैः स्वास्थ्यलाभ कर रही हैं। आशा है, वे शीघ्र ही पूर्णतया स्वास्थ्यलाभ प्राप्त कर अपना कार्य पूर्ववत् संभाल लेंगी। 'आर्य लोक वार्ता' रमा जी के शीघ्र एवं पूर्णतया स्वस्थ होने की कामना करता है।

श्रीमती शकुन्तला स्वरूप सम्मानित

दिनांक २० मई को श्री पाल प्रवीण के जन्मोत्सव के अवसर पर श्री पाल प्रवीण द्वारा वरिष्ठ नागरिक, विदुषी श्रीमती शकुन्तला स्वरूप को सम्मानित किया गया। श्रीमती स्वरूप ने इस अवसर पर अपने कई सुमधुर भजन सुनाये, जिसका उपस्थित जनों ने हृदय से स्वागत किया। श्रीमती स्वरूप का चिन्तन और विचार सर्वथा अभिनन्दनीय है। कार्यक्रम की सफलता और भव्यता का सर्वांश श्रेय वैदिक विदुषी डॉ.आचार्या श्रीमती निष्ठा विद्यालंकार को है, जिन्होंने अपने प्रवचन तथा गायन द्वारा श्री पाल प्रवीण के प्रति शुभकामनाएँ व्यक्त कीं।

समलैंगिकता- मानव समाज, हिन्दू धर्म संस्कृति के विनाश का जघन्य षडयंत्र

-कर्मयोगी आनन्द कुमार आर्य

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व कार्यकारी प्रधान कर्मयोगी श्री आनन्द कुमार आर्य ने एक वक्तव्य में समलैंगिकता को निरपराध घोषित करने के फैसले को सृष्टिक्रम के सर्वथा विपरीत तथा युग युग से चली आ रही प्राचीन आर्य वैदिक संस्कृति, मानव सभ्यता, हिन्दू धर्म तथा हिन्दू जाति को नष्ट करने की जघन्य साजिश करार दिया है। आपने कहा- इस फैसले के समक्ष हिन्दुत्व पर गर्व करने वाली भाजपा सरकार और उसके सहयोगियों की चुप्पी हैरान करने वाली है।

आनन्द कुमार आर्य ने आज के नेताओं से पूछा है- वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत इत्यादि मान्य ग्रंथों में अथवा हिन्दू धर्म के इतिहास में या राम कृष्ण, राणा, शिवा के जीवन दर्शन में समलैंगिकता का क्या कहीं भी समर्थन मिलता है। देश के शासक यह भूल जाते हैं कि समलैंगिकता इस्लामी संस्कृति की देन है। इस्लाम में जहाँ जन्नत या वहिश्त का जिक्र किया गया है, वहाँ शहद, शराब की नहरों के साथ ही हूरों और गिलमानों की उपलब्धता की चर्चा भी की गई है। यही कारण है कि मोहम्मद गोरी से लेकर अलाउद्दीन खिलजी आदि तक मुगल बादशाहों का इतिहास समलैंगिकता से भरा पड़ा है। क्या भाजपा के हिन्दुत्व पर गर्व करने वाले शासक उसी इस्लामिक संस्कृति को थोपना चाहते हैं?

एक सच्चे आर्यनेता की जिम्मेदारी निभाते हुए श्री आनन्द कुमार आर्य ने इस फैसले को वापस लेने की माँग की है तथा आवश्यकता पड़ने पर पुनर्विचार माननीय सर्वोच्च न्यायालय में याचिका दायर करने की घोषणा की है।

'विनम्र' के जन्मदिवस पर काव्यसंध्या

२५ जुलाई, लखनऊ। हिन्दी काव्य साधक गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र' के ६८वें जन्मदिवस पर बटोही साहित्यिक संस्था कानपुर के तत्वावधान में विनम्र के आवास-११७, आदिल नगर, विकास नगर, लखनऊ में सरस काव्यसंध्या आयोजित हुई जिसकी अध्यक्षता सुप्रसिद्ध आर्य चिन्तक, वरिष्ठ साहित्यकार एवं आर्य लोक वार्ता के प्रधान सम्पादक डॉ.वेद प्रकाश आर्य ने की। बटोही संस्था के संस्थापक डॉ.अशोक कुमार गुप्त अशोक मुख्य अतिथि तथा विशिष्ट अतिथि बाल साहित्यकार एवं विदुषी कवयित्री अंजू शर्मा रहीं। विनम्र के दामाद घनश्याम गुप्ता ने शॉल, पुष्पाहार एवं लेखनी-दैन्दिनी प्रदान कर सम्मान किया।

काव्य समारोह का शुभारम्भ घनानन्द पाण्डेय 'मेघ' की सुरीली वाणी वन्दना से हुआ। राजाभइया गुप्ता ने 'जन्मदिन की है बधाई आपको' कविता पढ़ी। युवा कवयित्री नमिता वैश्य ने नारी सशक्तीकरण का स्वर मुखरित किया-'मैं भारत की नारी हूँ, मुझको छुई-मुई मत समझो, मैं सशक्त चिंगारी हूँ।' विनम्र ने कई छन्दों सहित ग्रामीण खेलों पर आधारित बाल कविता सुनायी-'हमका तौ पसंद हय बहुतर, घर बाहेर कय खेल'।

उन्होंने अपनी सद्यः प्रकाशित कृति 'धधकते पृष्ठ' से ओजपूर्ण रचना का पाठ करके श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। इसके अतिरिक्त अवधेश गुप्त 'नमन', आदित्य चतुर्वेदी, रवीन्द्र नाथ तिवारी, इं.सुनील कुमार वाजपेयी, नरेन्द्र भूषण, रमाशंकर सिंह, अशोक कुमार पाण्डेय, विश्वनाथ वैश्य, अंजू शर्मा, शिवनाथ सिंह, मृगांक श्रीवास्तव, भूपेन्द्र सिंह 'शून्य', अशोक शुक्ल 'अनजान', हरिमोहन वाजपेयी 'माधव', डा.विद्याधर द्विवेदी, अशोक कुमार श्रीवास्तव 'रंग' आदि कवियों ने गीत, हास्यव्यंग्य, गीतिका, छन्द आदि विधाओं में काव्यपाठ करके रसवर्षा की। कार्यक्रम का संचालन रमाशंकर सिंह ने किया। संयोजक द्वारा सुरुचिपूर्ण स्वल्पाहार की व्यवस्था की गई।

आर्य समाज लखनऊ द्वारा वृक्षारोपण

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा लखनऊ के तत्ववावधान में प्रदूषण से आजादी की ओर कदम बढ़ाते हुए पर्यावरण संरक्षण के उद्देश्य से आर्य समाज द्वारा जनपद के विभिन्न स्थानों पर ११ अगस्त से वृक्षारोपण अभियान चलाया गया, जिसमें विशेष रूप से एवं विलुप्त होती हुई प्रजातियों के साथ साथ फलदार वृक्षों का रोपण किया जा रहा है। इस अभियान में आर्य समाज के कार्यकर्ताओं, डॉक्टर, इंजीनियर, पत्रकार आदि अनेक बुद्धिजीवी गणमान्य लोगों के साथ साथ ग्रामीण अंचल के लोगों द्वारा उत्साहपूर्वक भाग लिया गया।

इसी शृंखला में आइडियल ग्रुप ऑफ कॉलेजेज कुर्सी रोड के प्रांगण में वृक्षारोपण किया गया। इस प्रांगण में कैथा, बेल, लसोड़ा, कटहल, बरगद, पीपल, मौलश्री, महुआ, पकड़िया, अशोक, अर्जुन, कदंब, बढ़हल, आंवला, गूलर एवं अन्य प्रजातियों के वृक्षों को लगाया गया। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा लखनऊ के प्रधान श्री नवनीत निगम, मंत्री प्रबोध सागर जौहरी, अधिष्ठाता आर्य वीर दल श्री सर्वमित्र शास्त्री, पुस्तकाध्यक्ष श्री प्रेमशंकर मौर्य, आर्य समाज इंदिरा नगर की प्रधाना श्रीमती कांति कुमार, कर्नल अनिल आहूजा, श्री आर.डी.वमा, श्रीमती कुसुम वर्मा, अजय श्रीवास्तव, राजेश प्रकाश शर्मा, साधना सिंह पटेल के साथ साथ आइडियल ग्रुप आफ कॉलेज की मैनेजर श्रीमती माया आनन्द द्वारा वृक्षारोपण किया गया। *(प्रबोध सागर जौहरी)*

संस्थापक
स्व. स्वामी आत्मबोध सरस्वती

प्रधान संपादक
डॉ0 वेद प्रकाश आर्य
कार्यालय-19/838, प्रथम तल, रिंगरोड, इन्दिरानगर, लखनऊ-226016
9450500138

संपादक (अवैतनिक)
आलोक वीर आर्य
: 8400038484

प्रसार व्यवस्थापक
अमित वीर त्रिपाठी
: 9795445800

संवाद प्रमुख
गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'
: 9956087585

कार्यालय प्रमुख
श्रीमती सरला आर्य
: 9450500138

विशेष कार्याधिकारी
श्रीमती निमिषा वाजपेयी
: 7310119999

नवोन्मेष
कृष्णा जी. प्रिंटेक

ई-मेल
aryalokvarta@gmail.com

सहयोग राशि

सामान्य सदस्य	–	100 रु. वार्षिक
होता सदस्य	–	1,500 रु. वार्षिक
संरक्षक	–	15,000 रु.
प्रतिष्ठापक	–	50,000 रु.

सहयोग राशि निम्नलिखित बैंक की किसी भी शाखा में 'आर्य्य लोक वार्ता' खाते में जमा कर हमें सूचित कर सकते हैं। विवरण इस प्रकार है–

बैंक–बैंक आफ बड़ौदा, विभव खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ।
IFSC - BARBOVIBHAV
खाता धारक – आर्य लोक वार्ता
खाता सं. – 46900 1000 00651

प्रतिष्ठापक
श्री आनन्द कुमार आर्य, कोलकाता
श्री अरविन्द कुमार आर्कीटेक्ट, लखनऊ
श्री जे.पी.अग्रवाल, कनखल, हरिद्वार
डॉ. रजत बत्रा, लखनऊ

संरक्षक
श्रीमती बलबीर कपूर, लखनऊ
श्रीमती मिनी स्वरूप, नई दिल्ली
श्रीमती मधुर भण्डारी, नई दिल्ली
श्रीमती कमलेश पाल, लखनऊ,
कर्नल पाल प्रमोद, मेरठ
आचार्य आनन्द मनीषी, लखनऊ
पं.ज्ञानेन्द्र दत्त त्रिपाठी, लखनऊ
श्रीमती रामा आर्य 'रमा', लखनऊ
विश्वमित्र, एडवोकेट, लखनऊ
सर्वमित्र शास्त्री, लखनऊ

परामर्श एवं सहयोग
श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य 'वीरजी', सीतापुर
डा. सत्य प्रकाश, सण्डीला, हरदोई

सलाहकार
श्री आनन्द चौधरी एडवोकेट, लखनऊ

मुद्रक, स्वामी और प्रकाशक डॉ. वेद प्रकाश आर्य के लिए क्रियेटिव ग्राफिक्स, बी–2, हिमांशु सदन, 5–पार्क रोड, लखनऊ द्वारा मुद्रित तथा 'वेदाधिष्ठान' 539क / 234 हरीनगर, (रवीन्द्रपल्ली) पो.–इन्दिरानगर, लखनऊ से प्रकाशित।

ग्राम ग्राम में नगर नगर में, 'आर्य्य लोक वार्ता घर-घर में